

भा.वा.अ.शि.प-उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024



निदेशक की कलम से

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स., जबलपुर मध्य भारत में वनों और वानिकी क्षेत्रों के संतर विकास के लिए अनुसंधान सहायता प्रदान करने वाले भा.वा.अ.शि.प. देहरादून के अंतर्गत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।

मैं भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. समाचार पत्र के 12वें और 13वें संस्करण (अक्टूबर 2023–मार्च, 2024) को साझा कर रहा हूँ जिसमें इस अवधि के दौरान किये गए महत्वपूर्ण शोध कार्य, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और प्रकाशित शोध पत्र/पुस्तकें इत्यादि का उल्लेख है।

मैं आशा करता हूँ कि यह समाचार-पत्र वानिकी अनुसंधान से सम्बंधित शोधकर्ताओं, विभिन्न स्तर के हितधारकों और वानिकी सम्बंधित नीति निर्माताओं के लिए सहायक साबित होगा।

(डॉ. एच. एस. गिनवाल)
निदेशक,
भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स., जबलपुर

प्रमुख घटनाएँ

32वीं अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक

भा.वा.अ.शि.प. –उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा नई प्रस्तावित परियोजनाओं का आंकलन करने और चल रही वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा के लिए 9 अक्टूबर 2023 को ऑनलाइन माध्यम से 32वीं अनुसंधान सलाहकार समूह की बैठक आयोजित की गई।

परियोजनाओं का मूल्यांकन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के राज्य वन विभाग के अधिकारियों, शिक्षाविदों, विषय- विशेषज्ञों, प्रगतिशील किसानों, अन्य हितधारकों सहित मुख्य सदस्यों द्वारा किया गया। उ.व.अ.स. के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने आर. ए. जी. सदस्यों को इस वार्षिक बैठक की पृष्ठभूमि और अनुसंधान परियोजनाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। उन्होंने वन आनुवांशिकी, कीट और रोग, कृषि वानिकी, वनसंवर्धन, पारिस्थितिकी, जलवायु परिवर्तन और संस्थान की विस्तार गतिविधियों सहित विभिन्न क्षेत्रों में संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। चार नए प्रस्तावों में (अ) जल शुद्धिकरण के लिए औषधीय पौधे, (ब) नर्मदा नदी पर पर्यावरण क्षरण के कारक (स) मालू लता के बीज अध्ययन और संरक्षण की स्थिति (द) फलन और प्रसार बढ़ाने के लिए सलाई गोंद का कोशिका आनुवंशिकी का मूल्यांकन कर विचार एवं अनुशंसा की गई।

श्रीमती नीलू सिंह, समूह समन्वयक (अनुसंधान), उ.व.अ.स., जबलपुर ने संस्थान की स्थापना, अवसंरचनात्मक सुविधाओं, वित्तीय परिव्यय और संस्थान द्वारा संचालित अनुसंधान गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, बैठक के दौरान गणमान्य व्यक्तियों द्वारा “मध्य भारत में चयनित सागौन (टेक्टोना ग्रैंडिस) के उम्मीदवार प्लस वृक्षों” पर एक तकनीकी बुलेटिन जारी किया गया।



अंतर्वर्स्तु	पृष्ठ
प्रमुख घटनाएँ	1-2
वैज्ञानिक कॉर्नर/परामर्शी	2-7
परियोजनाएँ	
प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण	8-10
हितधारकों के दौरे/प्रदर्शन	10-11
गणमान्य व्यक्तियों के दौरे	11-12
महत्वपूर्ण दिवस पर उत्सव	12-14
नवीन प्रकाशन	15-19
पुरस्कार	19
बुनियादी ढांचे और सुविधाएँ	20-21
उपलब्ध परीक्षण/सुविधाएँ	
समाज के लिए उपलब्ध सेवाएँ	22-24

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13

चंद्रपुर वन अकादमी में नवीन वी.वी.के. की स्थापना

भा.वा.अ.शि.प. उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर ने कैम्पा विस्तार कार्यक्रम के तहत 22-03-2024 को चंद्रपुर वन अकादमी, महाराष्ट्र में एक नवीन वन विज्ञान केंद्र स्थापित किया। डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, उ.व.अ.स., और श्री एम. श्रीनिवासन रेण्डी, आई.एफ.एस., निदेशक, चंद्रपुर वन अकादमी ने इस उद्देश्य के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। डॉ. गिनवाल ने भा.वा.अ.शि.प. की विस्तार गतिविधियों पर प्रकाश डाला और अकादमी के साथ आगे सहयोग में रुचि व्यक्त की। श्री रेण्डी ने वी.वी.के. की स्थापना के लिए अत्यधिक आभार व्यक्त किया और अकादमी की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. ननिता बेरी ने मध्य भारत में कैम्पा के उद्देश्य, विस्तार योजना और वी.वी.के. की उपलब्धियों को सारगर्भित किया।



समझौता ज्ञापन

भा.वा.अ.शि.प. — उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने 20 मार्च 2024 को सागौन के एक क्लौन और बांस (बी.बालकोआ) का एक चयनित कॉडिडेट प्लस क्लंप (सी.पी.सी.) के टिशू कल्वर सामूहिक गुणन के लिए मेसर्स मुकुंद बायोटेक, जबलपुर के साथ “गैर-विशिष्ट लाइसेंस समझौता” पर हस्ताक्षर किए। समझौते पर भा.वा.अ.शि.प. — उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल और निदेशक, मुकुंद बायोटेक श्री दीपक अग्रवाल ने हस्ताक्षर किए। जर्मप्लाज्म का परीक्षण और मूल्यांकन डॉ. फातिमा शिरीन और उनकी टीम द्वारा किया गया। इस अवसर पर निदेशक भा.वा.अ.शि.प. — उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान ने सार्वजनिक निजी भागीदारी के महत्व पर जोर दिया। यह समझौता संस्थान में वर्षों के अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से विकसित उन्नत रोपण सामग्री (सागौन और बांस सहित) को मेसर्स मुकुंद बायोटेक को बड़े पैमाने पर इसे बढ़ाने और साथ ही साथ वन विभागों, वृक्ष उत्पादकों, किसानों, आम जनता और समाज तक अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए भी सहायता प्रदान करने के लिए किया गया।



वैज्ञानिक कॉर्नर / परामर्शी परियोजनाएँ

के.वी.के., कटनी, मध्य प्रदेश में एफ. जी. आर. संरक्षण के लिए आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण और आरईटी प्रजातियों के जीन बैंक की स्थापना

मध्य भारतीय क्षेत्र से मूल्यवान और लुप्तप्राय वानिकी प्रजातियों के वन आनुवंशिक संसाधनों (एफजीआर) के संरक्षण के लिए, कृषि विज्ञान केंद्र, कटनी, मध्य प्रदेश में एक क्षेत्र जीन बैंक स्थापित किया गया। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से हल्दीना कॉर्डिफोलिया (हल्दू), सिजियम क्यूमिनी (जामुन), लित्सिया ग्लूटिनोसा (मैदा छाल), ऐलेच्स एक्सेलसा (महानीम), केरिया आर्बोरिया (कुंभी) आदि को सुलभ बनाने और इनके संरक्षण के उद्देश्य से जीन बैंक की स्थापना के लिये बीज उगाकर पौधे लगाए गए।



वृक्षारोपण के लिए भूमि की तैयारी और रोपण सामग्री का के.वी.के. कटनी, मध्य प्रदेश में स्थानान्तरण



के.वी.के., कटनी, मध्य प्रदेश में विभिन्न प्रजातियों का रोपण

महत्वपूर्ण एफ.जी.आर. के जर्मप्लाज्म का सर्वेक्षण और संग्रह

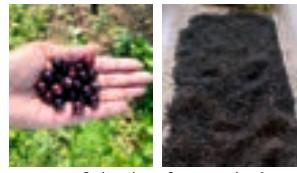
वास्तविक अथवा सम्भावित आर्थिक, पर्यावरणीय, वैज्ञानिक या सामाजिक मूल्य के वन आनुवंशिक पौधे की प्रजातियों के लिए आबादी के भीतर और उनके बीच बनाए रखी जाने वाली वंशानुगत सामग्री हेतु जर्मप्लाज्म का संग्रह आवश्यक होता है। उच्च प्राथमिकता

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13

वाली प्रजातियों के महत्वपूर्ण और विविध बीज स्रोतों की पहचान करने के लिए छत्तीसगढ़ के कोरिया, मनेंद्रगढ़ प्रतापपुर, सूरजपुर, मरवाही, भानुप्रतापपुर, कोडगांव, कांकेर और धमतरी और मध्य प्रदेश के अनूपपुर, सतना और शहडोल जैसे वन विभाग के विभिन्न स्थानों में फील्ड सर्वेक्षण कार्य किया। 34 बीज स्रोतों से लिटसिया ग्लूटिनोसा और 13 बीज स्रोतों से कैरिसा कैरेंडस के फल एकत्र किए गए।



लिटसिया ग्लूटिनोसा का चयनित बीज स्रोत



एल. ग्लूटिनोसा के एकत्रित फल और बीज



चयनित बीज स्रोत और कैरिसा कैरेंडस के फल और बीज एकत्र किए गए

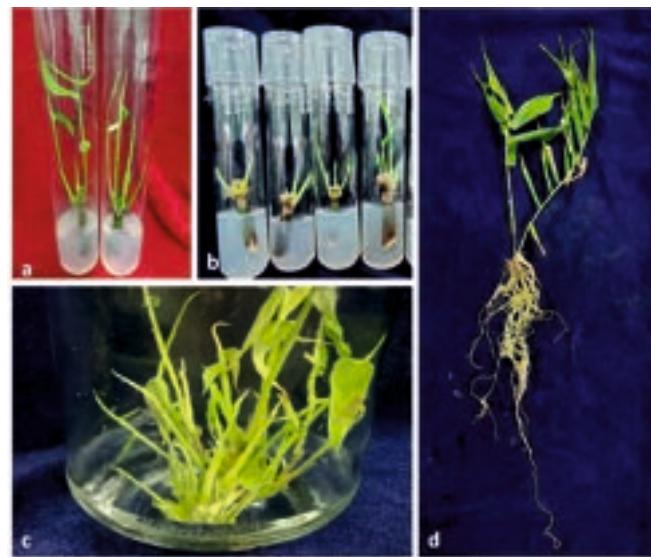
बड़े पैमाने पर प्रजनन हेतु बांस के मूल्य श्रृंखला का विकास, किसानों के क्षेत्र में लोकप्रियता और मध्य भारत में औद्योगिक जुड़ाव

आई.एस.एस.आर. प्राइमरों का उपयोग करते हुए पाँच बांस प्रजातियों (बन्धुसा बाल्कोआ, बी. दुल्डा, बी. नूटेंस, बी. वल्नारिस वैरायटी ग्रीन और स्यूडोक्सीटेनेथेरा स्टकसाई) पर कलोनल फिडेलिटी परीक्षण आयोजित किया गया नोडल खंडों के माध्यम से इन—विट्रो कल्वर स्थापना पर टीडीजेड की आठ अलग—अलग सांद्रता के प्रभाव और विभिन्न ऑक्सिन जैसे एनएए, आईएए, आईपीए, क्यूमरिन, फ्लोरोग्लुसीनोल, पिक्लोरम और बीटा—नैथोक्सीएसिटिक एसिड के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रयोग किए गए थे। 1 मिलीग्राम/लीटर टीडीजेड के साथ पूरक एमएस मीडिया में शूट की अधिकतम संख्या (4.27) और पत्तियों की अधिकतम संख्या (3.18) 0.5 मिलीग्राम/लीटर टीडीजेड के साथ दर्ज की गई। अधिकतम रूटिंग प्रतिशत (33 प्रतिशत) अर्ध—ठोस एमएस मीडिया में 10 मिलीग्राम/लीटर कौमरिन और फ्लोरोग्लुसीनोल से समृद्ध किया गया था। उपचारित पी. स्टॉकसी में, 2000 पीपीएम एन. ए.ए. से उपचारित कल्म कटिंग में उच्चतम रूटिंग प्रतिशत (54.87 प्रतिशत) देखा गया, जबकि 2000 पीपीएम एन.ए.ए. उपचार के साथ कल्म शाखा कटिंग में अधिकतम रूटिंग प्रतिशत (47.25 प्रतिशत) प्राप्त किया गया। जड़ विकास के संदर्भ में, कल्म कटिंग में जड़ों की संख्या सबसे अधिक (12.78) और जड़ की लंबाई सबसे अधिक (10.54 सेमी) देखी गई। दूसरी ओर, कल्म शाखा कटिंग में जड़ों की संख्या सबसे अधिक (9.67) और जड़ की अधिकतम लंबाई (8.43 सेमी) थी। कुंडम परीक्षण स्थल, जबलपुर में स्थापित छह बांस प्रजातियों जैसे बी. दुल्डा, बी. नूटेंस, बी. वल्नारिस, बी. बाल्कोआ, बी. बम्बोस और डी. स्ट्रिक्टस के प्रजाति परीक्षण के लिए मॉर्फोमेट्रिक डेटा दर्ज किया गया। कुंडम परीक्षण में, बी. बम्बोसा (एमएन—सीएल—2) में अधिकतम कल्म ऊचाई (3.09 मीटर) और पुलों की अधिकतम संख्या (5.98) देखी गई, जबकि, बी. वल्नारिस (आर.ए.आई.—सी.एल.—1) में अधिकतम कल्म व्यास (2.61 सेमी) दर्ज किया गया था। उ.व.अ.स. परिसर में स्थापित परीक्षण में, बी. बाल्कोआ (बीओटी—सीएल—1) में पुल की अधिकतम ऊचाई (5.82

मीटर), डी. स्ट्रिक्टस (बीएएल—सीएल—4) में पुल की अधिकतम संख्या (6.93) और अधिकतम पुल का व्यास (4.94 सेमी) बी में नूटेस (जी.ई.एन.—सी.एल.—1) दर्ज किए गए।



बी. वल्नारिस और बी. बाल्कोआ वलोन (एल=लैडर, एम=मदर प्लांट) का वलोनल फिडेलिटी परीक्षण



अ) स्यूडोक्सीटेनेथेरा स्टॉकसाई का सूक्ष्मप्रसार
स) प्ररोह गुणन
ब) कली का निकलना
द) इन विट्रो रूटिंग

डॉ. फातिमा शिरीन, वैज्ञानिक—जी

चिरौंजी (बुचनानिया कोविनचिनेसिस) में नवीन जी—एसएसआर मार्करों का विकास: एक सामाजिक—आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण गैर—लकड़ी वन प्रजाति

चिरौंजी, एनाकार्डिएसी परिवार से संबंधित है और आमतौर पर मध्य भारत में चिरौंजी को चार के नाम से भी जाना जाता है। यह उच्च मूल्य वाला जंगली फलदार पौधा है और इसमें व्यावसायिक बागवानी प्रजाति बनने की बहुत अधिक क्षमता है। एनाकार्डियासी परिवार के अन्य सदस्यों के विपरीत, कुछ आणविक अध्ययनों को छोड़कर इस प्रजाति की जीनोमिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। अनुसंधान अंतर को पहचानते हुए, माइक्रोसेटेलाइट मार्कर के विकास के लिए जीनोम अनुक्रमण किया गया। इलुमिना प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए, 6.29 जी.बी. उच्च गुणवत्ता वाला डेटा प्राप्त किया गया। प्राइमर सत्यापन से 0.494 की औसत अपेक्षित विषमयुग्मजीविता, 0.373 की बहुरूपी सूचना सामग्री, 0.245 की जीन विविधता और 0.395 की जीन

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण–12 एवं 13

विविधता का पता चला। इस अध्ययन में ज्ञात हुआ है कि उत्पन्न माइक्रोसैटेलाइट मार्कर चिरौंजी जर्मप्लाज्म के लक्षण वर्णन में प्रभावी उपयोग के लिए एक मूल्यवान जीनोमिक संसाधन का प्रतिनिधित्व करते हैं।



**तालिका: एस.एस.आर. पहचान आँकड़े
विवरण तालिका**

विवरण	संख्या
जांचे गए मचानों की कुल संख्या	183,201
परीक्षित अनुक्रमों का कुल आकार (बीपी)	225,895,093
पहचाने गए एस.एस.आर. की कुल संख्या	36,584
अनुक्रम वाले एस.एस.आर. की संख्या	26,922
2 (डाई-न्यूकिलयोटाइड दोहराव)	9,653
3 (त्रि-न्यूकिलयोटाइड दोहराव)	23,789
4 (टेट्रा-न्यूकिलयोटाइड दोहराव)	2,634
5 (पेंटा-न्यूकिलयोटाइड दोहराव)	401
6 (हेक्सा-न्यूकिलयोटाइड दोहराव)	107
फिल्टर किए गए एस.एस.आर. की संख्या	20,740

**अंकुर दहायत,
पी.एच.डी. स्कॉलर
और डॉ. नसीर मोहम्मद, वैज्ञानिक–ई**

मध्य भारत में मेलिया डुबिया परिचय एवं मूल्यांकन

क्रमांकित ब्लॉक डिजाइन में तीन प्रतिकृतियों के साथ 50 उन्नत किस्मों/जीनोटाइप को रोपित करके पांच परीक्षण सिलों (मुरैना, छिंदवाड़ा, नागपुर, अमरावती और दुर्ग) में मेलिया डुबिया का मूल्यांकन परीक्षण स्थापित किया गया है। आठ जीनोटाइप ने सभी परीक्षण स्थलों पर ऊंचाई और कॉलर व्यास के मामले में बेहतर प्रदर्शन किया, हालांकि इन जीनोटाइप को परीक्षण स्थल पर विशिष्ट अनुशंसा हेतु अधिक मूल्यांकन की आवश्यकता है।



मेलिया डुबिया प्रायोगिक स्थल का एक दृश्य

डॉ. नसीर मोहम्मद, वैज्ञानिक–ई

भारत में अश्वगंधा के विभिन्न जीनोटाइप का संग्रह

अश्वगंधा (विथानिया सोन्निफेरा) सोलानेसी परिवार से संबंधित है जिसे आमतौर पर “इंडियन विंटर चेरी” या “इंडियन जिनसेंग” के रूप में भी जाना जाता है। इसमें विभिन्न उपचारों में उपयोग के लिए जैसे रोगाणुरोधी, एंटीइंफ्लेमेटरी, एंटीस्ट्रेस, एंटीट्यूमर, न्यूरोप्रोटेक्टिव और कई अन्य औषधीय गुण होते हैं। मध्य भारत में अश्वगंधा के जर्मप्लाज्म को उनके लक्षण वर्णन एवं मूल्यांकन के लिए देश के विभिन्न स्थानों जैसे अमरकंटक और मंडला (मध्य प्रदेश), बिलासपुर (छत्तीसगढ़), देहरादून (उत्तराखण्ड), शिमला (हिमाचल प्रदेश), नागपुर (महाराष्ट्र) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) से एकत्रित किया गया है।



आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग की नर्सरी में अश्वगंधा के पौधे

उच्च लकड़ी उत्पादकता के लिए हल्दीना कॉर्डिफोलिया (हल्दू) का चयन और मूल्यांकन

मध्य भारत के तीन राज्यों मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में व्यापक सर्वेक्षण के बाद हल्दीना कॉर्डिफोलिया के तीस कैंडिडेट प्लस ट्री (सी.पी.टी.) को चिह्नित किया गया। इन सी.पी.टी. से प्राप्त बीजों का अंकुरण एवं संरक्षण संस्थान में किया गया और जुलाई 2023 में जगमंडल रेंज, मंडला, मध्य प्रदेश और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में दो संतति परीक्षण किए गए। पॉलीबैग में उगाए गए हल्दीना कॉर्डिफोलिया पौधों की ऊंचाई 80 सेमी से 120 सेमी तक थी और विकास के एक वर्ष के बाद उनका व्यास लगभग 8 से 13 सेमी तक पाया गया।

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



मंडला और विलासपुर में एच. कॉर्डियोलिया के पौधों का वृक्षारोपण

श्री निखिल वर्मा, वैज्ञानिक—बी

कॉर्डिया मैकलियोडी (दाहिमन) की आबादी में परिवर्तनशीलता का आंकलन और छत्तीसगढ़ में इसका संरक्षण

दाहिमन (कॉर्डिया मैकलियोडी), मध्यभारत का एक महत्वपूर्ण स्थानिक, गंभीर रूप से लुप्तप्राय जातीय औषधीय पौधा है। छत्तीसगढ़ के बारह वन मंडलों जैसे पेंड्रा—मरवाही, विलासपुर, कोरिया, सरगुजा, रायगढ़, बस्तर, धमतरी, बलौदा बाजार आदि में व्यापक क्षेत्रीय सर्वेक्षण कर 125 पेंड्रों की जियोटैगिंग की गई और जैव रासायनिक और रूपात्मक विविधताओं का आंकलन करने के लिए प्रयोगात्मक कार्य प्रारंभ किये गए। साथ ही साथ स्टेम कटिंग से मैक्रो प्रसार के आईबीए की तीन अलग—अलग सांदर्भ क्रमशः 500 पीपीएम, 1000 पीपीएम एवं 1500 पीपीएम का प्रयोग किया गया।



छत्तीसगढ़के वन क्षेत्र में दाहिमन की प्राकृतिक रिथिति

**डॉ. कौशल त्रिपाठी,
वैज्ञानिक—बी**

मिट्टी की नमी टेरोकार्पस मार्सुपियम पौधे की वृद्धि को कैसे प्रभावित करती है?

मिट्टी की नमी अंकुरों की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जैसे जड़ विकास, पानी और पोषक तत्वों का सेवन, तापमान विनियमन इत्यादि। अंकुरों के रूपात्मक मापदंडों के माध्यम से मापे गए मिट्टी की नमी परिवर्तन के प्रभाव में पौधों की भौतिक विशेषताओं का अवलोकन शामिल होता है। अंकुरों में नमी परिवर्तन के प्रभाव के प्रमुख पैरामीटर

पत्ती का मुरझाना, पत्ती का रंग, तने और पत्ती का स्फीत होना, जड़ की वृद्धि, अंकुर का बढ़ाव, पत्ती का झुकाव कोण और पत्ती की सतह का तापमान इत्यादि हैं। अध्ययन के दौरान, यह देखा गया कि अपर्याप्त मिट्टी की नमी के कारण, टेरोकार्पस मार्सुपियम अंकुर की पत्तियां किनारों से पीली या भूरे रंग की हो जाती हैं, जो खेत में पानी के तनाव की स्थिति के लक्षणों को दर्शाती हैं। अवलोकन अवधि के दौरान (अक्टूबर—जनवरी) पौधों को सिंचाई प्रदान नहीं करने पर मिट्टी में छोटी दरारें बनने से भी वृक्षारोपण क्षेत्र में नमी की कमी का संकेत मिलता है। इसके उपरांत भी खेत में 90 प्रतिशत से अधिक पौधे जीवित बचे। हालाँकि इस अवधि के दौरान अंकुर की ऊँचाई और वृद्धि बहुत धीमी थी (2–8 सेमी) और नमी के तनाव के कारण पत्तियां में क्लोरोफिल की मात्रा कम हो गई। इसलिए, वृक्षारोपण में अंकुरों की स्थापना के पूरे चरण में, रूपात्मक मापदंडों (पत्ती का रंग और ऊँचाई वृद्धि) को मिट्टी की नमी का प्रमुख संकेतक माना जा सकता है। इससे सिंचाई की आवश्यकता को समझने और खेत की स्थितियों में पौधों के लिए सिंचाई के अंतराल को तय करने में मदद मिलेगी।



अक्टूबर 2023 के दौरान टेरोकार्पस मार्सुपियम में अंकुरों की वृद्धि

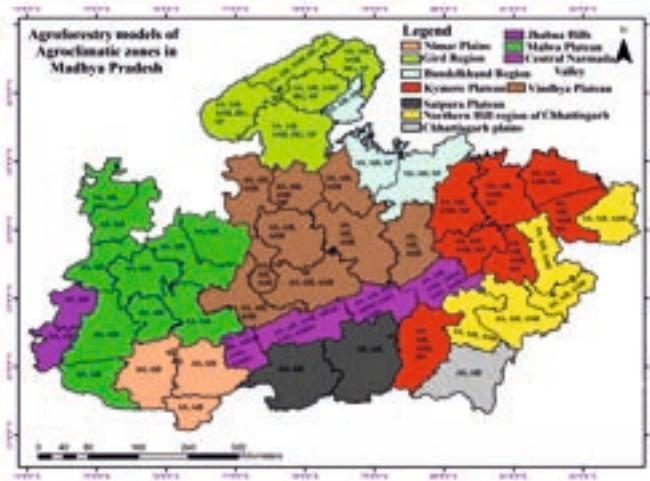


जनवरी 2024 के दौरान टेरोकार्पस मार्सुपियम में अंकुरों की वृद्धि

मध्यप्रदेश के चयनित कृषि जलवायु क्षेत्रों में बहुस्तरीय कृषि वानिकी प्रणालियों का विकास

सहायक साहित्य के आधार पर मध्यप्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में मौजूदा कृषि वानिकी मॉडल का दस्तावेजीकरण किया गया।

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण–12 एवं 13



मध्यप्रदेश में कृषि जलवायु क्षेत्रों के अंतर्गत कृषि वानिकी मॉडल(ए.एस.=
कृषि–सिल्वीकल्वर, ए.एच.= कृषि–बागवानी, ए.एस.एच.=कृषि–सिल्वी–बागवानी, एस.
ओ.= सिल्वी–ओलेरीकल्वर, ए.एच.एस.पी.= कृषि–बागवानी–सिल्वी–चारागाह, ए.एस.
ओ.= कृषि–सिल्वी –ओलेरीकल्वर, एस.एच.ओ.= एग्री–सिल्वी–हॉर्टी–ओलेरीकल्वर,
एचजी = होम–गार्डन, एसपी = सिल्वी–चारागाह)

श्री दिविजय सिंह, वैज्ञानिक–बी

जंगली फल प्रजातियों फ्लैकोर्टिया इंडिका (ककई) और सेमेकार्पस एनाकार्डियम (भिलवा) के लिए प्रसार संलेखों का मानकीकरण

मैक्रो प्रसार प्रयोग क्रमशः स्टेम कटिंग और एयर लेयरिंग तकनीकों का उपयोग करते हुए, जंगली फल प्रजातियों, फ्लैकोर्टिया इंडिका और सेमेकार्पस एनाकार्डियम पर आयोजित किए गए थे। इन तरीकों को एक लागत प्रभावी गैर–धूध प्रचारक की सहायता से लागू किया गया था। प्रारंभिक निष्कर्षों से पता चलता है कि 24 घंटों के लिए 1000 पीपीएम आईबीए बेसल उपचार फ्लैकोर्टिया इंडिका में जड़ निर्माण को बढ़ाता है, जबकि मिट्टी और 1000 पीपीएम आईबीए का संयोजन वायु–स्तरित शाखाओं पर लागू किया गया जो सेमेकार्पस एनाकार्डियम में जड़ प्रेरण के लिए उत्साहजनक परिणाम प्रदर्शित करता है।



मध्य भारत की कमज़ोर वृक्ष प्रजाति कोक्लोस्पर्मम गॉसिपियम (गैबडी) में बीज पूर्व–उपचार मानकीकरण

मध्य भारत की स्थानीय एवं दुर्लभ वृक्ष प्रजाति कोक्लोस्पर्मम गॉसिपियम के लिए बीज पूर्व उपचार प्रोटोकॉल का मानकीकरण किया गया। सबसे प्रभावी उपचार में 500 पीपीएम जीए3 के लिए 24 घंटे का एक्सपोजर शामिल था, जिससे अंकुरण दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो नियंत्रण समूह के विपरीत 40 प्रतिशत तक पहुंच गई, जिसने केवल 15 प्रतिशत अंकुरण दर हासिल की।



टेरोस्पर्मम एसेरीफोलियम (कनकचम्पा) में एल्बिनो अंकुर

टेरोस्पर्मम एसेरीफोलियम की नर्सरी में एल्बिनो अंकुर देखे गए। एल्बिनो पौधों में प्रकाश संश्लेषण के लिए आवश्यक क्लोरोफिल की कमी होती है। इसका कारण आनुवंशिक उत्परिवर्तन या पर्यावरणीय तनाव जैसे अपर्याप्त प्रकाश, पोषक तत्वों की कमी या रोगजनक कारक हो सकते हैं।



श्री मनीष कुमार विजय,
वैज्ञानिक–बी

कोयला खदान के ओवरबर्डन डंप पर लगाए गए साल के पौधों की मृत्यु के कारणों का आंकलन

भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. के वैज्ञानिकों ने कोयला खदान के ओवरबर्डन डंप पर लगाए गए साल के पौधों में मृत्यु के कारणों का पता लगाने के लिए एनसीएल सिंगरोली का दौरा किया। यह वृक्षारोपण एम.ओ.ई.एफ.सी.सी. और एन.सी.एल. के बीच हस्ताक्षरित एम.ओ.यू. के हिस्से के रूप में मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड (एम.पी.आर.वी.वी.एन.) द्वारा किया गया है।



वैज्ञानिकों ने वृक्षारोपण स्थल का भ्रमण कर मिट्टी एवं पौधों के नमूने एकत्र किये तथा एम.पी.आर.वी.वी.एन. एवं एन.सी.एल. के अधिकारियों से विस्तार से चर्चा की। मध्य प्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड (एम.पी.आर.वी.वी.एन.) को मौजूदा साल बागानों की सफलता दर में सुधार लाने और नॉर्डन कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) में ओबी डंप पर नए बागान स्थापित करने की सलाह दी गई।



पादप रोग विशेषज्ञ द्वारा
संक्रमित पत्ती के नमूनों
का संग्रह

डॉ. अविनाश जैन, वैज्ञानिक–एफ

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण–12 एवं 13



सूक्ष्मप्रवर्धित बांस और सागौन की नर्सरी में रोगों के प्रबंधन के लिए राइजोस्फीयर और एंडोफाइटिक बैक्टीरिया को बढ़ावा देने वाले पौधों के विकास के साथ बायोटाइजेशन।

मध्य प्रदेश के विभिन्न संभागों (मंडला, खंडवा, उज्जैन, सागर, झाबुआ, पचमढ़ी और (तेजगढ़) दमोह संभाग से राइजोस्फीयर बैक्टीरियल आइसोलेट्स (20) के पृथक्करण और शुद्धिकरण का कार्य किया गया। सूक्ष्म प्रवर्धित बांस और सागौन की नर्सरी में बीमारियों के प्रबंधन के लिए संभावित पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले राइजोस्फीयर (पी. जी.पी.आर.), उपभेदों के चयन के लिए इन विट्रो स्क्रीनिंग का कार्य शुरू किया जा रहा है।



मध्य प्रदेश के विभिन्न संभागों से राइजोस्फीयर जीवाणुओं का संग्रहण एवं पृथक्करण

डॉ. दर्शन के., वैज्ञानिक—बी

सागौन और मेलाइना के प्रमुख डिफोलिएटर कीटों के प्रबंधन के लिए क्लीस्टेन्थस कोलिनस पत्ती के अर्क के नैनोफॉर्म्यूलेशन का विकास।

सी. कोलिनस पर्ण—निस्तारण की विभिन्न सांद्रता के कीटनाशक प्रभाव का विवेदन करने के लिए जैव—तत्व प्रयोग किए गए। परिणामों से पता चला कि 72 घंटे के उपचार के बाद 2.5 प्रतिशत की सांद्रता पर सागौन स्केलेटनाइजर, डिफोलिएटर और मेलाइना लीफ वेबर की लार्वा मृत्यु दर क्रमशः 80 प्रतिशत, 73.33 प्रतिशत और 86.6 प्रतिशत थी।



प्रयोगशाला में सागौन डिफोलिएटर और स्केलेटनाइजर के खिलाफ सी. कोलिनस पर्ण—निस्तारण की विभिन्न सांद्रता के कीटनाशक प्रभाव का परीक्षण

डॉ. मोहन सी., वैज्ञानिक—बी

मच्छर निरोधकों के निर्माण और उनके मूल्यांकन के लिए प्राकृतिक वन संसाधनों की खोज और उपयोग

मच्छर प्रतिकर्षी तरल पदार्थ, क्रीम, लार्विसाइड और स्प्रे विकसित किए गए। हर्बल मच्छर प्रतिकर्षी तरल फॉर्मूलेशन को मच्छर प्रतिकर्षी

गतिविधि और मृत्यु दर के लिए अनुकूलित और परीक्षित किया गया। जिसमें से चार फॉर्मूलेशन प्रभावी पाए गए और लैंटाना कैमारा, हिटिस सुवायोलेंस, क्लारोविसलॉन स्विटेनिया, मुरैना कोएनिगी और एंड्रोग्राफिस पैनिकुलाटा प्रजातियों से युक्त फॉर्मूलेशन के परिणामस्वरूप 72–92 प्रतिशत मच्छरों की मृत्यु हुई। सभी विकसित क्रीम नमूने का परीक्षण जैसे पी. एच., ताप स्थिरता, कुल वसा युक्त सामग्री, कुल अवशेष, भारी धातु एवं सूक्ष्म जीवों इत्यादि के लिए आई एस 6608:2004 विनिर्देशों के सभी मापदंडों का अनुपालन करते हैं।



हर्बल मच्छर विकर्षक, वेपोराइजर और लार्विसाइड



हर्बल मच्छर विकर्षक



मच्छर विकर्षक क्रीम

डॉ. विशाखा कुंभरे, वैज्ञानिक—एफ

आई.यू.एफ.आर.ओ. के तहत केन्या वानिकी अनुसंधान संस्थान, नैरोबी—केन्या के वरिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक की वैज्ञानिक यात्रा

आई.यू.एफ.आर.ओ. के तहत वैज्ञानिक यात्रा (5 फरवरी 2024 से 25 मार्च 2024) केन्या वानिकी अनुसंधान संस्थान, नैरोबी—केन्या के अंतर्राष्ट्रीय फेलो डॉ. मैग्रेट काइगॉंगी, वरिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक द्वारा की गयी और संयुक्त परियोजना “भारत और केन्या से कैरिसा स्पाइनारम एल के इन विट्रो एंटीऑक्सीडेंट, एसिटाइल कोलिने स्टरेजे—निरोधक और एंटीप्रोलिफेरेटिव गुणों में फाइटोकेमिकल घटकों पर भौगोलिक अंतर का निहितार्थ” विषय विकसित की एवं श्रीमती नीलू सिंह, वैज्ञानिक—जी, समूह समन्वय (अनुसंधान) के मार्गदर्शन में अनुसंधान कार्य किया।



अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. के वैज्ञानिकों ने भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा विकसित नए फॉर्म फैक्टर का उपयोग करके प्राप्त लकड़ी की मात्रा का अनुमान लगाने के संबंध में छत्तीसगढ़ वन विभाग, वन वृत्त रायपुर के 117 वन अधिकारियों को दो दिवसीय को प्रशिक्षण प्रदान किया।



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने 18 से 22 दिसंबर 2023 तक राष्ट्रीय बांस मिशन की बी.टी.एस.जी. योजना के तहत 22 महिला आदिवासियों के लिए बांस हस्तशिल्प पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण के दौरान, बांस के मूल्य संवर्धन कौशल के माध्यम से लैंप, किलप और कलाकृतियां बनाना सिखाया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. हरीश सिंह गिनवाल ने महिलाओं को इस हुनर के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने 31 जनवरी से 2 फरवरी, 2024 तक “मिट्टी परीक्षण—आधारित पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं” पर तीन दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस दौरान, मध्य प्रदेश के 15 प्रभागों और 110 रेंजों के वन अधिकारियों ने “इष्टतम उत्पादकता और वानिकी प्रजातियों की उपज के लिए मिट्टी के पोषक तत्वों को कुशलतापूर्वक संतुलित करना” विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह कार्यशाला “भारत के सभी वन प्रभागों में विभिन्न वन वनस्पतियों के अंतर्गत वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने” के लिए अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत आयोजित की गई थी।



तीन दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में, श्री असीम श्रीवास्तव, वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश और श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आई.सी.एफ.आर.ई.) ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। डॉ. विजेंद्र पंवार, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्य डॉ. एच. एस. गिनवाल, निदेशक भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., श्री प्रदीप वासुदेवा, निदेशक, रा.व.अ.स.य श्री. एस.के. सिंह, निदेशक कान्हा राष्ट्रीय उद्यानय श्री रवींद्र मणि त्रिपाठी,

उपनिदेशक एस.एफ.आर.आई. और डॉ. अविनाश जैन, वैज्ञानिक और प्रमुख वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने एस.एच.सी. की तैयारी के लिए वन मिट्टी के संग्रह की पद्धति, पोषक तत्वों के प्रबंधन और मध्य प्रदेश की मिट्टी में उर्वरकों के इष्टतम स्तर के अनुप्रयोग पर प्रशिक्षण प्राप्त किया, तथा उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान वनों के सतत प्रबंधन के लिए जैव उर्वरकों के अनुप्रयोग और मध्यप्रदेश के वनों की उत्पादकता बढ़ाने में एस.एच.सी. के उपयोग के बारे में भी सीखा।



भारतीय वन सेवा (आई.एफ.एस.) अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण

जंगलों के बाहर पेड़ों के महत्व को समझने, देश के हरित आवरण को बढ़ाने और 33 प्रतिशत वन आवरण के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर एवं पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित किया गया। यह कार्यशाला “कृषि वानिकी मॉडल और आजीविका सुरक्षा के लिए इसके प्रबंधन” पर प्रायोजित था तथा इस कार्यशाला में भारतीय वन सेवा अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। वस्तुतः प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (भा.वा.अ.शि.प.) ने किया। डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. और डॉ. ननिता देवी, पाठ्यक्रम निदेशक ने कृषिवानिकी और कार्यशाला गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदाय की।

इसी तारतम्य में विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. पी.सी. दुबे, आई.एफ.एस., पूर्व पी.सी.सी.एफ., मध्य प्रदेश, वर्तमान में अध्यक्ष एस.सी.ए.एस.—एम. पी. सरकार; डॉ. रमेश चंद धीमान, सलाहकार सस्टेनेबल एग्रोफॉरेस्ट्री इनिशिएटिव्स और ग्रीनलैम इंडस्ट्रीज लिमिटेड, दिल्ली और डॉ. श्याम विश्वनाथ, पूर्व निदेशक, के.एफ.आर.आई., पीची ने व्याख्यान दिया और प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने “कृषि वानिकी – बेहतर भूमि उपयोग प्रथाएं” पर एक पाठ्यक्रम पुस्तक और वृत्तचित्र भी जारी किया। इस प्रशिक्षण में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड और कर्नाटक के भारतीय वन सेवा (आई.एफ.एस) अधिकारियों ने भाग लिया।



अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. जबलपुर ने 21 फरवरी से 23 फरवरी, 2024 तक “जलवायु परिवर्तन और भूमि क्षेत्र में फ्लाईश का उपयोग” पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। श्री आर.एन. शुक्ला, प्रमुख, वन एवं पर्यावरण, अडानी कॉरपोरेट हाउस, अहमदाबाद के साथ देश भर से अडानी थर्मल पॉवर प्लांट और सहयोगी कार्यालयों के 17 अन्य अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। इस अवसर पर उ.व.अ.स. के निदेशक डॉ एच.एस. गिनवाल ने बताया कि देश के प्रमुख उद्योग संस्थान के हितधारक हैं तथा संस्थान के वैज्ञानिक उनके मुद्दों को उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और पार्किंग समन्वयक डॉ. अविनाश जैन ने प्रतिभागियों को बताया कि भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. जबलपुर के परामर्श से देश का पहला फ्लाई—ऐश अनुसंधान पार्क अडानी पावर लिमिटेड, गोंदिया में स्थापित किया जा रहा है। अडानी के अधिकारियों और औद्योगिक पर्यावरण प्रबंधकों की पूरी टीम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रशंसा की।



भा.वा.अ.शि.प. के कैम्पा विस्तार कार्यक्रम के तहत 29 फरवरी 2024 को प्रदर्शन—गाँव बंजारी, सिवनी में खरपतवारों से चारकोल बनाने और मशरूम की खेती पर लाइव प्रदर्शन आयोजित किए गए, इसका उद्देश्य वन अधिकारियों और महिला स्वयं सहायता समूहों के बीच कम लागत वाली प्रौद्योगिकी का प्रसार करना था। इस अवसर पर श्रीमती नीलू सिंह, समूह समन्वयक (अनुसन्धान), भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर द्वारा लकड़ी से कोयला बनाने की प्रक्रिया समझाई गई तथा श्री गोपाल सिंह, एस.डी.ओ. ने भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर के उत्पादों को लोकप्रिय बनाने के लिए वन धन केंद्र, सिवनी के साथ उद्यम शुरू करने के लिए नई तकनीक की आवश्यकता पर जोर दिया।



छत्तीसगढ़ राज्य वन नर्सरी प्रबंधन पर सहभागी के रूप में 20 प्रथम पंक्ति के वन कर्मचारियों के लिए भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. जबलपुर में अत्याधुनिक नर्सरी तकनीकों के साथ आर.ई.टी. और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों के प्रसार पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें श्रीमती नीलू सिंह, समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री जुटाने में प्रशिक्षण के महत्व पर जोर दिया। प्रशिक्षण समन्वयक और वैज्ञानिक—जी, डॉ. फातिमा शिरीन ने आर.ई.टी. और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों को बढ़ाने और नर्सरी में उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर संस्थान के सभी प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक, अधिकारी और अनुसंधान विशेषज्ञ भी शामिल हुए।

कैम्पा, छत्तीसगढ़ परियोजना और भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में, बिलासपुर और दुर्ग वन मंडलों के 70 से अधिक वन अधिकारियों को ‘मूल्यवान वृक्ष प्रजातियों के वृक्षारोपण और प्रबंधन’ पर दो दिवसीय प्रशिक्षण (12 और 13 मार्च, 2024) प्रदान किया गया। भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर से डॉ. ननिता बेरी, श्री दिग्विजय राठोड़ और डॉ. दर्शन ने प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में श्री राजेश चंदेले, मुख्य वन संरक्षक, बिलासपुर एवं वनमण्डलाधिकारी श्री संजय यादव एवं श्री चन्द्रशेखर भी उपस्थित रहे।



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने दो राज्यों में स्थित कृषि विज्ञान केंद्र, कांकेर (छत्तीसगढ़) में दिनांक 5,6,7,8,10 और 11 से 13 फरवरी 2024 तथा क्रमशः 4,6,7,9,11 तथा 13 मार्च 2024 को के.वी.के. कोडरमा (कोडरमा जिला), तोरपा, कर्रा (खूंटी जिला) झारखण्ड में “सतत कृषि वानिकी उद्यम : जैविक उर्वरक, जैव उर्वरक और जैव कीटनाशकों के माध्यम से उद्यमियों को सशक्त बनाना” विषय पर छह अलग—अलग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान (एन.आई.ए.एम.), जयपुर द्वारा प्रायोजित और वनसंवर्धन, वन प्रबंधन और कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर के सहयोग से वन संरक्षण प्रभाग द्वारा आयोजित किए गए थे। प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को जैव उर्वरकों की व्यापक समझ, उनकी संरचना, लाभ और अनुप्रयोग विधियों सहित जैव उर्वरकों की व्यापक समझ प्रदान करना है, जिससे वे स्थायी कृषि वानिकी में उनके उपयोग के संबंध में उचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।



अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13

भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने 11–15 मार्च, 2023 तक एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम “अत्याधुनिक नर्सरी तकनीकों के साथ आर.ई.टी. और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों के प्रसार” पर आयोजित किया।



हितधारकों का दौरा और प्रदर्शन

वन रक्षक, वन रेंजर कॉलेज बालाघाट (म.प्र.) द्वारा 03.11.2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर का दौरा किया गया।



पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय जबलपुर के विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 3.11.2023 एवं 9.11.2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर का दौरा किया गया।



ज्ञान गंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) के छात्रों द्वारा 08.11.2023 एवं 9.11.2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., का दौरा किया गया।



हितकारिणी कॉलेज ऑफ फार्मेसी, जबलपुर (म.प्र.) के छात्रों द्वारा 08.11.2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., का दौरा किया गया।



शासकीय श्रमोदय आवासीय विद्यालय, मंगेली, जबलपुर (मध्यप्रदेश) के 6वीं, 7वीं और 8वीं कक्षा के 312 छात्रों ने भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर, मध्यप्रदेश का दौरा किया।



पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, मंडला (म.प्र.) के 97 छात्रों और 10 शिक्षकों की एक टीम ने 20 दिसंबर 2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर का दौरा किया।



डॉ. एस.सी. विश्वास, वैज्ञानिक—ई, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने ग्राम धूमा के बाजार में जंगली फल कैरिसा कैरंडास (क्रैनबेरी) के विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों को प्रदर्शित किया। उन्होंने किसानों को क्रैनबेरी के उपयोग एवं फायदों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कटनी (म.प्र.) के 41 छात्रों ने 08 दिसंबर 2023 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर का दौरा किया।



अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संरक्षण—12 एवं 13

हितधारकों के लिए त्रि-दिवसीय प्रशिक्षण सत्र एवं प्रबंधन विकास कार्यक्रम जिसका उद्देश्य “विज्ञान एवं वानिकी के माध्यम से नदी पुनर्जीवन था”, विषय पर वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग के, श्री एम. राजकुमार (वैज्ञानिक—डी) ने व्याख्यान दिया। इसका आयोजन आई.आई.एफ.एम., भोपाल द्वारा किया गया।

इसमें छात्रों, अनुसंधान अध्येयतायों, युवा उद्यमियों और गैर सरकारी संगठनों के प्रशिक्षुओं और जल संसाधनों और इसके संरक्षण से संबंधित मुद्दों पर काम करने वाले चिकित्सकों सहित लगभग 22 प्रतिभागी शामिल रहे।



पीएम श्री शासकीय एकीकृत विद्यालय घुंसौर के 10 संकाय सदस्यों के साथ 58 छात्रों ने भा.वा.अ.शि.प—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। उन्हें उ.व.अ.स., संग्रहालय सह व्याख्या केंद्र में प्रदर्शित विभिन्न वानिकी अनुसंधान गतिविधियों और उ.व.अ.स., एन.डब्ल्यू.एफ.पी. नर्सरी में औषधीय पौधों और उनके उपयोग के बारे में जानकारी भी प्रदाय की गई।



शासकीय मॉडल साइंस कॉलेज, जबलपुर (म.प्र.) के वनस्पति विज्ञान के द्वितीय वर्ष के 93 छात्रों और 3 शिक्षकों ने भा.वा.अ.शि.प—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य विभिन्न वनस्पतियों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना और संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों का अवलोकन करना एवं सीखना था।



भा.वा.अ.शि.प—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल, सगड़ा, प्रिंसिपल एवं 15 शिक्षकों सहित 300 छात्रों के लिए “प्रकृति कार्यक्रम मिशन जीवन” का आयोजन किया। डॉ. ननिता बेरी वन विस्तार प्रभाग की प्रभागाध्यक्ष द्वारा कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्रदाय की गई तथा वैज्ञानिक श्री एम. राजकुमार ने पर्यावरण जागरूकता पर व्याख्यान दिया। श्रीमती भारती एथानी, प्रिंसिपल शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल, सगड़ा द्वारा उ.व.अ.स., जबलपुर में अन्य कार्यक्रम और एक्सपोजर विजित आयोजित करने में गहरी रुचि दिखाई गई।



भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने ज्ञान गंगा कॉलेज, जबलपुर के फार्मेसी के 32 छात्रों के लिए एक्सपोजर सह फील्ड विजिट का आयोजन किया। विद्यार्थियों को संस्थान में चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने हर्बल औषधियों के बारे में जानने में गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की पहचान और उपयोग के लिए एन.डब्ल्यू.एफ.पी. नर्सरी का भी दौरा किया।



गणमान्य व्यक्तियों का दौरा

श्री प्रकाश कुमार ताम्रकार, निदेशक, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने 18 दिसंबर 2023 को भा.वा.अ.शि.प—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। अपनी इस यात्रा के दौरान, उन्होंने डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प—उ.व.अ.स., जबलपुर के साथ संस्थान के कामकाज के विभिन्न पहलुओं के बारे में बातचीत की। श्री ताम्रकार ने संस्थान द्वारा अनुसंधान एवं राजस्व सृजन के लिए किये जा रहे प्रयासों की सराहना की।



निदेशक द्वारा किये गए दौरे

भा.वा.अ.शि.प—उ.व.अ.स., जबलपुर के निदेशक, डॉ. एच.एस. गिनवाल ने श्री शैलेश टेंमुर्निकर, पी.सी.सी.एफ. और वन बल प्रमुख (एच.ओ.एफ.एफ.) महाराष्ट्र राज्य वन विभाग के अन्य उच्च अधिकारियों के साथ 29 नवंबर 2023 को पी.सी.सी.एफ. कार्यालय, नागपुर में बैठक की। उन्होंने संस्थान में चल रही अनुसंधान गतिविधियों और राज्य वन विभाग के साथ आगे के सहयोग के लिए संभावित अनुसंधान क्षेत्रों पर चर्चा की। श्री शैलेश टेंमुर्निकर ने राज्य की क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान में अपने विभाग के समर्थन और सहयोग का आश्वासन दिया।

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13

डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर और वैज्ञानिक डॉ. अविनाश जैन, डॉ. हरिओम सक्सेना, श्री. एन.डी. खोबरागड़े ने वेस्टर्न कोल फील्ड लिमिटेड, परासिया, तामिया (छिंदवाड़ा) के अधिकारियों से बातचीत की। उन्होंने पातालकोट की जैव विविधता के बारे में चर्चा की और भविष्य में इसके संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया।

डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने 1.12.2023 को भा.वा.अ.शि.प.—कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा का दौरा किया। उन्होंने केंद्र की सभी अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों की समीक्षा की और सभी वैज्ञानिकों, कर्मचारियों को केंद्र के लिए राजस्व एकत्रित करने हेतु प्रेरित किया। इस यात्रा के दौरान परिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग के प्रमुख, डॉ. अविनाश जैन, वैज्ञानिक—एफ भी साथ रहे।



महत्वपूर्ण दिनों पर उत्सव

संविधान दिवस

भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, मध्यप्रदेश ने 26 नवंबर 2023 को भारत के संविधान की प्रस्तावना पढ़कर संविधान दिवस मनाया। कार्यक्रम में निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल, श्रीमती नीलू सिंह, समूह समन्वयक (अनुसन्धान), संस्थान के सभी प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी और अनुसंधान अध्येयता उपस्थित थे। संस्थान के कर्मचारियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कर प्रमाणपत्र अर्जित किये।



जनजातीय गौरव दिवस

तृतीय जनजातीय गौरव दिवस 2023 की शृंखला में, भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर मध्यप्रदेश द्वारा 22 नवंबर 2023 को जबलपुर के बरबटी गांव में 'एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय' के कक्ष 6 से कक्ष 12 के 400 आदिवासी छात्रों के लिए 'पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम' का आयोजन किया। स्कूल के छात्रों ने स्वागत गीत के साथ गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और सरस्वती वंदना गाई। उ.व.अ.स. के डॉ. एस.एन. मिश्रा ने संस्थान के बारे में जानकारी दी और विस्तार प्रभाग की डॉ. ननिता बेरी ने आयोजन के उद्देश्य और आदिवासी समुदायों के उत्थान की दिशा में उ.व.अ.स. में हो रहे कार्यों के बारे में बताया। छात्रों और शिक्षकों को एक उ.व.अ.स. डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी दिखाई गई। प्राचार्य श्री ओ.पी. डहेरिया ने संस्थान के अन्य जागरूकता कार्यक्रमों में भी भाग लेने में गहरी रुचि दिखाई। कार्यक्रम का समन्वयन विस्तार प्रभाग और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।



भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर (म.प्र.) द्वारा श्री बिरसा मुंडा जी के 148वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में 15 नवंबर 2023 को "जनजातीय गौरव दिवस" का आयोजन किया। प्रभारी निदेशक द्वारा पुष्टांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में संस्थान के सभी प्रभाग के प्रभागाध्यक्षों, उप वन संरक्षक (प्रशासन), आदिवासी समूह, अधिकारियों, कर्मचारियों और अनुसंधान अध्येयताओं आदि ने भाग लिया। वन विस्तार प्रभाग की प्रभागाध्यक्षा डॉ. ननिता बेरी ने जनजातीय समुदाय के लिए 'जल, जंगल और जमीन' के लाभों पर जोर देते हुए श्री मुंडाजी के कार्यों को याद किया।



स्वच्छ भारत अभियान / राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती

भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर विशेष स्वच्छता अभियान शुरू किया, जिसके बाद एक स्वच्छता रैली निकाली गई। अभियान के दौरान, संस्थान की प्रयोगशालाओं, कीटालायों, बैठक कक्षों, नर्सरी, खेतों और अन्य इनडोर और आउटडोर सुविधाओं में 2 से 7 अक्टूबर 2023 तक नियमित सफाई का कार्यक्रम आयोजित किया।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह—2023

सतर्कता जागरूकता सप्ताह—2023 (30 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2023) का आयोजन भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक उ.व.अ.स. की उपरिथिति में सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा के साथ शुरू हुआ। संकल्प समारोह का नेतृत्व सतर्कता अधिकारी डॉ. फतिमा शिरीन ने किया, जिन्होंने "भ्रष्टाचार को ना: राष्ट्र के लिए प्रतिबद्धता" विषय के बारे में भी जानकारी दी और संस्थान के भीतर भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण को बढ़ावा देने के लिए सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं सहित विभिन्न गतिविधियों की रूपरेखा तैयार की।



अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13

सतर्कता जागरूकता सप्ताह —2023 के समापन समारोह में श्री उमाशंकर अग्रवाल, सचिव जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण, जबलपुर उपरिथित थे। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए 'सार्वजनिक जिम्मेदारी' और 'व्यक्ति के लिए बुनियादी कानूनी ज्ञान' के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने अपने अनुभवों से लोक अदालत, पीड़ित मुआवजा योजना और आर्थिक रूप से कमज़ोर पीड़ितों को मुफ्त कानूनी सहायता के प्रावधान के बारे में भी विस्तार से बताया। निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल, ने संस्थान की कार्य संस्कृति की सराहना की और सभी को अपने काम में नैतिक मानकों और अखंडता बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। सतर्कता अधिकारी, डॉ. फातिमा शिरीन ने संस्थान में बनाए गए भ्रष्टाचार मुक्त माहौल पर प्रकाश डाला और आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में उपरिथित गणमान्यों ने इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किये।



राष्ट्रीय एकता दिवस—2023

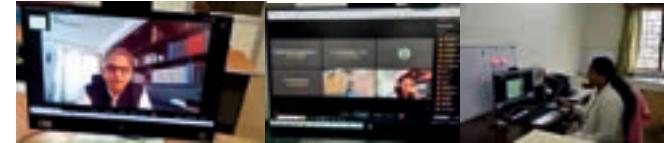
भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल और स्वतंत्रता के बाद भारत के एकीकरण में उनके महत्वपूर्ण योगदान को याद करते हुए, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने 31 अक्टूबर 2023 को उनकी जयंती पर एकता की शपथ लेकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।



विश्व मृदा दिवस 2023

भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने 5 दिसंबर, 2023 को "मिट्टी और पानी: जीवन का एक स्रोत" थीम के साथ विश्व मृदा दिवस, 2023 कार्यक्रम मनाया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और अनुसंधान अध्येयतायों सहित कुल 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने उद्घाटन भाषण दिया और पौधों की वृद्धि के लिए मिट्टी और पानी के महत्व पर जोर दिया। मुख्य भाषण डॉ. राजीव के, सिंह, प्रमुख और प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), भारतीय मृदा और जल संरक्षण संस्थान (आई.आई.एस.डब्ल्यू.सी.), कोटा द्वारा "भारत में भूमि क्षरण तटस्थला प्राप्त करना: मृदा संरक्षण मुद्दों पर परिप्रेक्ष्य" विषय पर दिया गया। उन्होंने भूमि क्षरण तटस्थला प्राप्त करने के लिए रणनीतियों, बीहड़भूमि, वर्षा आधारित कृषि प्रणालियों और वाटरशेड प्रबंधन के लिए आई.आई.एस.डब्ल्यू.सी. द्वारा विकसित विभिन्न मिट्टी और जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. सिंह ने खड़ क्षेत्र पुनर्वास के लिए वृहद स्तर की योजना पर भी जोर दिया। डॉ. जंगम दीपिका, वैज्ञानिक—बी. भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., जबलपुर ने संस्थान द्वारा तैयार मध्यप्रदेश के वन मृदा स्वास्थ्य कार्डों पर एक सक्षिप्त प्रस्तुति दी।



पर्यावरण की रक्षा के लिए जीवनशैली में बदलाव अपनाने के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए, मिशनलाइफ के रूप में भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में एक सेल्फी पॉइंट स्थापित किया गया।

ICFRE—TROPICAL FOREST RESEARCH INSTITUTE, JABALPUR



75वां गणतंत्र दिवस

भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., द्वारा 75वां गणतंत्र दिवस मनाया गया, कार्यक्रम के दौरान डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा राष्ट्रीय धज फहराया गया। अपने संबोधन में उन्होंने देश की वैज्ञानिक प्रगति की चर्चा के साथ—साथ स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय संविधान के निर्माण तथा संस्थान और परिषद की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स., में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने नर्मदा नदी के किनारे सफाई गतिविधियाँ आयोजित कीं और इसके अविरल और निर्मल जल के संरक्षण के लिए पवित्र नदी की पूजा की।



अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13



अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस 2024

भा.वा.अ.शि.प. — उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर ने “अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस 2024” मनाया। जबलपुर के 3 स्कूलों क्रमशः ‘शासकीय श्रमोदय विद्यालय चूल्हा गोलाई’, सगड़ा और सिलुआ हायर सेकेंडरी स्कूल के लगभग 100 छात्र इस अवसर को मनाने के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ उ.व.अ.स. परिसर स्थित नक्षत्र वाटिका में 16 प्रजातियों के पेड़ों के रोपण में उपस्थित हुए। “वन और नवाचार: एक बेहतर दुनिया के लिए नए समाधान” विषय पर छात्रों के लिए संस्थान में “भारत के राष्ट्रीय उद्यानों में बाघ” पर एक फिल्म भी दिखाई गई। विस्तार प्रभाग की प्रमुख डॉ. ननिता बेरी ने छात्रों को संस्थान के वानिकी अनुसंधान प्रगति के बारे में जानकारी दी और वर्षीकम्पोस्ट यूनिट, टिशू कल्चर लैब और उ.व.अ.स. संग्रहालय का दौरा कराया।



स्टाफ समाचार

क्र.सं.	वैज्ञानिक / तकनीकी स्टाफ / कर्मचारी	(स्थान) से	(स्थान) तक
1.	श्री स्करिहा सी.जी., पी.एस.	भा.वा.अ.शि.प. — उ.व.अ.स.	आई.एफ.जी.टी.बी.— कोयम्बटूर
2.	श्री सुखराम मीणा, एम.टी.एस.	भा.वा.अ.शि.प. — उ.व.अ.स.	ए.एफ.आर.आई.— जोधपुर





नवीन प्रकाशन

शोध पत्र

- ⌘ बेरी, ननिता और शुक्ला, आकाश (2023)। मध्य प्रदेश के जबलपुर ज़िले के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में कैसुरिना इविवसेटीफोलिया क्लोन के विकास प्रदर्शन का आकलन। पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 13 (11) : 266 – 271 (एनएएस—5.13.)।
- ⌘ दर्शन, के., अग्रवाल, आर., बश्याल, बी.एम., सिंह, जे., सहारन, एम.एस., गुर्जर, एम.एस., और सोलंके, ए.यू. (2023) आनुवंशिकता का आकलन करने के लिए ट्रांसक्रिप्टोम—व्युत्पन्न उपन्यास ईएसटी—एसएसआर मार्करों की विशेषता और विकास किटोमियम ग्लोबोसम में विविधता। 3 बायोटेक 13, 379 (2023)। (आईएफ.2.93 ऐट एनएएस 8.93.)।
- ⌘ विजय, एम.के., सिंह, एन., चौहान, एस., जोशी, एम., तिवारी, एस., और कहार, एल. (2023)। टेरेस्प्यर्म एसरीफोलियम (एल) विल्ड में अंतर्वृष्टि: मध्य भारतीय वनस्पतियों का एक दुर्लभ पौधा। औषधीय पौधों के यूरोपीय जर्नल, 34(11–12), 92–103। एनएएस रेटिंग: 4.89।
- ⌘ विजय, एम.के., तिवारी, एस., कहार, एल., मालवीय, डी., और सिंह, एन. (2023)। किडिया कैलीसीना बहुमुखी प्रतिभा की खोज: उपयोगिता, वनस्पति विज्ञान, संरक्षण और खेती के पहलुओं पर एक व्यापक समीक्षा। जैविक मंच – एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 16(3): 14–21 एनएएस रेटिंग: 4.96।
- ⌘ सिंह, एन. और गुप्ता, वी. (2023)। इनडोर वातावरण पर बायोपॉलिमर कॉम्फोरा वाइटी (गुग्गुल) ओलियो गम राल धुएं का प्रभाव। बलोरियाई केमिकल कम्युनिकेशंस, खंड 55, विशेष अंक—ए, 2023, पृष्ठ 85 – 89।
- ⌘ कुमार जी, मिश्रा एम और त्रिपाठी के (2024) सौफ के पौधे (फोनीकुलम वलारे मिल) में माइक्रोस्पेरोजेनेसिस के दौरान गामा विकिरण प्रेरित साइटोमिक्रिसिस का परिणाम। आईएसएसएन 0095–4527, साइटोलॉजी और जेनेटिक्स, 2024, वॉल्यूम | 58, नंबर 1, पृ. 46–52।
- ⌘ सिंह, एन., राय, एन. और गुप्ता, वी. (2023)। देशी और संशोधित फाइटो—पॉलिमर, करकुमा एंगुस्टिफोलिया के स्टार्च और पॉलिमर फिल्मों के विकास के गुणों का मूल्यांकन। बलोरियाई केमिकल कम्युनिकेशंस, खंड 55, विशेष अंक—2023 ए, पृष्ठ 261–266।
- ⌘ सेल्वन, टी., पनमेई, एल.मुरासिंग के.के., गुलेरिया, वी., रमेश के. आर., भारद्वाज, डी.आर., ठाकुर, सी.एल. कुमार, डी., शर्मा, पी. आर. उमेदसिंह, डी., कयालविज्ञी, डी. और देशमुख, एच.के. (2023)। कृषि में चक्रीय अर्थव्यवस्था: खाद्य सुरक्षा और सतत विकास के लिए एकीकृत जैविक खेती की क्षमता को प्रदर्शित करना। खाद्य सिस्ट. 7:1170380. डीओआई: .3389FSUFS. 2023.1170380।

⌘ रमेश, के. आर., देशमुख, एच. के., शिवकुमार, के., गुलरिया, वी. उमेदसिंह, आर.डी.; कृष्णकुमार, एन.; थंगमलार, ए.; सुगन्धा, के.; किंबा, एम.; सेलवन, टी.; और अन्य। भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में फसल की पैदावार, मिट्टी के गुणों और सिस्टम अर्थशास्त्र पर यूकेलिप्टस कृषि वानिकी का प्रभाव। 15,3797. एचटीटीपीएस: /डीओआई.ओआरजी / 10.3390 / एसयू 150 43797।

⌘ प्रवीण रावत, ओमबीर सिंह, मनीषा थपलियाल, के आर रमेश, राठौड दिविजय सिंह, स्नेहा डोभाल, इंद्र सिंह, राज कुमार, रवींद्र सिंह, थिरु सेलवन और रणजीत कुमार (06 मार्च 2024): भारतीय लाख के पेड़ की बीज सुक्तावस्था और पकने के बाद की आवश्यकताएं (श्लीचेरा ओलेओसा लूर. ओकेन), जर्नल ऑफ फॉरेस्ट रिसर्च, डीओआई:10.1080 / 13416979.2024. 2325202।

⌘ मोहन, सी., नितिन कुलकर्णी, साक्षी द्विवेदी, ज्योति रंजन मिश्रा और नाहर सिंह मावई (2023)। सागौन (टेकटोना ग्रैंडिस) के प्रमुख पत्तेनाशक कीटों के विरुद्ध जेट्रोफा (जेट्रोफा करकस) बीज के तेल का लार्वानाशक प्रभाव। 28–30 सितंबर, 2023 के दौरान कीट विज्ञान अनुसंधान संस्थान, लोयोला कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु में “कृषि, औद्योगिक कीट विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान में हालिया प्रगति और उनके प्रभाव खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा” पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में। (विस्तारित सारांश)।

लोकप्रिय लेख

- ⌘ दर्शन, के. एट अल., 2023. वन वृक्ष में मेलाटोनिन की एकाधिक भूमिकाएँ। ई—कृषि विज्ञान पत्रिका. आईएसएसएन: 2583–4150.के.एस—2957।
- ⌘ दिविजय सिंह राठौड, सौरभ दुबे, डॉ ननिता बेरी, कौशल त्रिपाठी एवं दर्शन के. यू. (2023). उत्तर बस्तर की अमूल्य वन विरासत : एक परिदृश्य, पर्यावरण पत्रिका, पृष्ठ 93–96।
- ⌘ मनीष कुमार विजय, नीलू सिंह, नितिन कुलकर्णी (2023). बीज जीन बैंक व्यापना के माध्यम से मध्य भारत के वन आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण, मध्य प्रदेश वनांचल संदेश, विशेष संस्करण 25, पृ.सं. 111–112।
- ⌘ मनीष कुमार विजय (2023). सेमीकार्पस एनाकार्डियम (भिलवा) और फलेकोटिया इडिकिया (कटायी) मध्य भारत की औषधीय :प से महत्वपूर्ण जंगली फल प्रजातियाँ, पर्यावरण (पर्यावरण मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका), 71 वां अंक, पृ.सं. 35–37।
- ⌘ मनीष कुमार विजय एवं ननिता बेरी (2023). वन रोपणी में प्लास्टिक का उपयोग: महत्व, समस्याएं और विकल्प, पर्यावरण (पर्यावरण मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका), 71 वां अंक, पृ.सं. 16–17।
- ⌘ सैकत बनर्जी, और अविनाश जैन (2024)। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन: मानवता के लिए एक आसन्न संकट। वान संग्रहान, 1(1):30–32।



पुस्तकें और पुस्तक अध्याय

- ⌘ बिस्वाल एम, वर्मा वी, त्रिपाठी के, यादव एनके और हिंगवे एस (2023) प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज़: कंजर्वेशन एंड सस्टेनेबल यूज़। नई दिल्ली, भारत: एलफिंस्टन प्रकाशन, 123पी, आईएसबीएन 978-81-19778-54-वी।

⌘ कृष्णपा, सी., काव्या, वी.एस., अक्षय कुमार, एच.एम., रेड्डी, पी., राजेश्वर राव, जी., और दर्शन, के. (2023)। एंडोफाइटिक सूक्ष्मजीव और पौधों के स्वास्थ्य में उनकी भूमिका। माइक्रोबियल सहजीवन और पादप स्वास्थ्य में: जलवायु परिवर्तन के लिए रुझान और अनुप्रयोग (पीपी. 301-328)। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।

⌘ दर्शन, के., हर्षिता, के.एन., श्रीदेवसेना, एस., टेलर, ए., भोई, टी. के., निगम, एस., और कुलकर्णी, एन. (2024)। वन वृक्ष प्रजातियों के तनाव सहनशीलता के प्रबंधन में मेलाटोनिन की भूमिका। पौधों में मेलाटोनिन में: अजैविक तनाव और रोगजनक संक्रमण के लिए एक प्लियोट्रोपिक अणु (पीपी। 177-194)। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।

⌘ गौरव चंद रमोला, लेखेंद्र साहू, दिव्विजय राठौड़, अक्षित कुकरेती और सुर्जीत एस रावत (2023)। “मृदा क्षरण और क्षरण: कारण, प्रभाव और मामले का अध्ययन” मृदा क्षरण और क्षरण: कारण, प्रभाव और मामले का अध्ययन, इन: अक्षित उनियाल, ईशा शर्मा और इंदु तिवारी, (संस्करण) मृदा पुनर्स्थापन: मूल्यांकन और सुधार। पीपी 91-104 आईएसबीएन: 978-93-94380-21-9।

⌘ दर्शन के, रविदर कुमार, (2023) “वन वृक्ष प्रजातियों के तनाव सहिष्णुता के प्रबंधन में मेलाटोनिन की भूमिका” पौधों में मेलाटोनिन: अजैविक तनाव और रोगजनक संक्रमण के लिए एक प्लियोट्रोपिक अणु। 978-981-99-6740-7, 602231-1-एन, (अध्याय 10)।

⌘ मनीष कुमार विजय 2024 वानिकी बीज प्रबंधन के मूलभूत सिद्धांत एवं मध्य भारत में विभिन्न वानिकी प्रजातियों के बीज प्रबंधन प्रोटोटोकॉल विकसित करने में आईसीएफआरई-टीएफआरआई की भूमिका” विषय पर “हाईटेक नर्सरी तकनीकों के साथ आरईटी और व्यावसायिक: पर से महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों का प्रसार” विषय पर सीजीएसएफडी फ्रंटलाइन कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए तैयार प्रशिक्षण में नुअल में अद्याय पी. 11 / 03 / 24-15 / 03 / 24 नंबर 78-91।

⌘ डॉ ननिता बेरी (2024) हरित भविष्य के लिए कृषिवानिकी आधारित उद्यमों को सशक्त बनानाए प्रशिक्षण मैनुअल में पुस्तक अध्याय ,छत्तीसगढ़ प्रशिक्षण कार्यक्रम सतत कृषि वानिकी उद्यम: जैविक उर्वरकों, जैव उर्वरकों और जैव कोटनाशकों के माध्यम से उद्यमियों को सशक्त बनाने हेतु प्रशिक्षणां 7-11।

प्रशिक्षण मैनुअल / प्रशिक्षण मैनुअल अध्याय

- ⌘ वर्मा वी, बिस्वाल एम, हिंगवे एस, तिवारी ए, त्रिपाठी के (2023) द न्यूट्रिशनल फ्रॉन्टियर: सेरल ग्रेन्स में बायोफोर्टिफिकेशन स्ट्रैटेजीज। दिल्ली, भारत: एलफिंस्टन प्रकाशन, 67पी, आईएसबीएन 978-81-19778-99-7।

- ⌘ सतत कृषि वानिकी उद्यम: जैविक जीवाशम, जैव मानक और जैव कीटनाशकों के माध्यम से छत्तीसगढ़ के उद्यमियों को औद्योगिक प्रशिक्षण “संपादक: दर्शन के., ए. जे. के. असैया, राठोड़ दिव्य सिंह यू. रणजीत पी. सी. (2024), 1–70।

- ⌘ सतत कृषिविज्ञान उद्यमः जैविक जीवाशम, जैव रासायनिक उद्यम और जैव कीटनाशकों के माध्यम से झारखण्ड के उद्यमियों को मजबूत बनाया ने प्रशिक्षण-'संपादक: दर्शन के, ए. जे. के. असैया, राठेडू दिग्भिव्य सिंह यु., रंजीत पी. सी. (2024), 1–70।

सारांश

- ⌘ निकिता राय, ननिता बेरी, और नीलू सिंह (2023)। मध्य प्रदेश के मध्य नर्मदा घाटी कृषि—जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत नरसिंहपुर जिले के किसानों द्वारा अपनाई गई कृषि वानिकी प्रणाली की स्थिति। सार पुस्तक एनएसीईटीआर—2023 में पर्यावरण अनुसंधान में उभरते रुझानों पर राष्ट्रीय सम्मेलन 14–15 दिसंबर, 2023, पृष्ठ संख्या | 75 |

- ⌘ इरशाद अली सौदागर, पी.के.राणा, सुषमा मरावी, निखिल वर्मा और फातिमा शिरीन (2024)। मधुका लोंगिफोलिया (महुआ) के आनुवंशिक सुधार के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता की ओर एक कदम। पर्यावरण अध्ययन विभाग, एमआईटी-डब्ल्यूपीयू पुणे द्वारा जलवायु कार्रवाई, पारिस्थितिकी और पर्यावरण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। पृष्ठ संख्या | 15 |

- झ गंगोपाध्याय, एस., यादव, एन., पांडे, एच.के., और शिरीन, एफ. (2024) जीमेलिनारबोरिया रॉक्सबी का आनुवांशिक सुधार। (खमेर) टिकाऊ प्रथाओं का उपयोग कर रहे हैं। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 35।

- ❖ राज सिंह यादव, फातिमा शरीन, अंकुर दहायत और नसीर मोहम्मद (2024)। हार्डविकियाबिनाटारॉक्सबी में जांच के लिए माइक्रोसैटेलाइट्स मार्करों का विकास। मध्य भारत में, पर्यावरण अध्ययन विभाग, एमआईटी-डब्ल्यूपीयू पुणे द्वारा जलवायु कार्रवाई, पारिस्थितिकी और पर्यावरण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। पृष्ठ संख्या । 48 ।

- ঝ বিকেব বৰ্মা, ত্ৰিলোক গুপ্তা, মুকেশ সোনকর আৰু ফাটিমা শিৰীন (2024)। কৃষি জলবায়ু ক্ষেত্ৰ আঠ মেঁ বেহতৰ পেড়োঁ' কে চয়ন কৈ মাধ্যম সে নীম (অজাভিৱেক্টা ইন্ডিকা) কা আনন্দুংশিক সুধার। পৰ্যাবৰণ অধ্যয়ন বিভাগ, এমআইটী-ডল্ব্যুপীয়ু পুণে দ্বাৰা জলবায়ু কাৰ্রাৰ্বাঈ, পাৰিস্থিতিকী আৰু পৰ্যাবৰণ পৰ অন্তৰ্ভুক্তীয় সম্মেলন আয়োজিত কিয়া গয়া। পৰ্যাবৰণ ।

- ঝ বিষেক বর্ষা, নসীর মোহম্মদ, ওর ফাতিমা শিরীন (2024)। ঔষধীয় রূপ সে মহত্বপূর্ণ হল্দীনাকোড়িফোলিয়া (রঁকসবী) রিড্সডেল (হল্দু) কী পত্তিয়ে সে পাংচ অলগ—অলগ ডীএনএ নিষ্কর্ষণ প্রোটাকোল কা মানকীকরণ ওর তুলনাত্মক মূল্যাকান। উত্তরী বাংগাল মেঁ ঔষধীয় পৌঁঁঘো কী খেতী, সংরক্ষণ ওর সতত উপযোগ পর রাষ্ট্ৰীয় সংগোষ্ঠী 13–14 মাৰ্চ, 2024, সিলীগড়ী, পশ্চিম বাংগাল। পষ্ঠ সঁ। 73।

- ⌘ फातिमा शिरीन, इरशाद अली सौदागर, त्रिलोक गुप्ता, मुकेश

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संरक्षण—12 एवं 13



कुमार सोनकर और सुषमा मरावी (2024)। छत्तीसगढ़ के चिन्हित स्रोतों से सेलेस्ट्रस पैनिकूलैट्स (मलकांगनी) और प्लम्बैगो जेलेनिका (चित्रक) की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का संरक्षण और उत्पादन। उत्तर बंगाल में औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और सतत उपयोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 13–14 मार्च, 2024, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल पृष्ठ संख्या। —77।

❖ फातिमा शिरीन (2024)। वन आनुवंशिक संसाधनों (एफजीआर) के संरक्षण के लिए निहितार्थ: सतत वानिकी प्रथाओं के माध्यम से वृक्ष संरक्षण के लिए एक कदम। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 1–2।

❖ इरशाद अली सौदागर, फरहत जहां, सुषमा मरावी, मुकेश कुमार सोनकर, फातिमा शिरीन (2024)। आनुवंशिक सुधार और पालतू बनाना: एक महत्वपूर्ण एनटीएफपी प्रजाति, मधुका लॉगिफोलिया (महुआ) में पहल। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 3।

❖ शर्मिष्ठा गंगोपाध्याय, नीरज यादव, हरे कृष्ण पांडे और फातिमा शिरीन (2024)। गमेलिना आर्बोरिया रॉक्सब का आनुवंशिक सुधार। (खेमेर) टिकाऊ प्रथाओं का उपयोग कर रहे हैं। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 35।

❖ विवेक वर्मा, निखिल वर्मा, नसीर मोहम्मद और फातिमा शिरीन (2024)। नवीन प्रसार तकनीकों के माध्यम से निकट संकटग्रस्त औषधीय वृक्ष हल्दीना कॉर्डिफोलिया (हल्दू) का वानस्पतिक प्रसार। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 36।

❖ इरशाद अली सौदागर, विनीत कुमार मेहरा, हरिओम बरमैया, त्रिलोक गुप्ता, मनोज पूसम और फातिमा शिरीन (2024)। वानस्पतिक प्रसार आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बैंस की प्रजातियाँ: स्यूझो जाइटेनथेरास्टॉक्सिस। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 45।

❖ शालू पनिका, प्रियंका हरदहा, कविता पटेल, पीके राणा और फातिमा शिरीन (2024)। छद्म जायटेनेटेरा स्टॉक्सी में एक्सिलरी बड़ प्रसार और शूट गुणन पर थिडियाजुरोन का प्रभाव। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 49।

❖ राज सिंह यादव, नसीर मोहम्मद, फातिमा शिरीन, अंकुर दहायत और हर्षिता अग्रहरि (2024)। उच्च गुणवत्ता वाले डीएनए निष्कर्षण प्रोटोकॉल का अनुकूलन हार्डविकिया बिनटा रोक्सब में एसएसआर मार्कर के माध्यम से पीसीआर प्रवर्धन के लिए अनुकूल। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ सं। 53।

❖ विजय, एम.के., तिवारी, एस., कहार, एल., और सिंह, एन.

(2024)। बी.एम. और अन्य। चेटोमियम ग्लोबोसम में आनुवंशिक विविधता का आकलन करने के लिए ट्रांसक्रिप्टोम-व्युत्पन्न उपन्यास ईएसटी—एसएसआर मार्करों की विशेषता और विकास। बायोटेक, 3 (13), 379।

❖ विजय, एम.के., मालविया, डी., शिरीन, एफ., और सिंह, एन. (2024)। कल के जंगलों में बीज बोना: मध्य भारत में बीज की गुणवत्ता और विविधता के मूल्यांकन के लिए मशीन विजन का उपयोग करना। कृषि, अनुप्रयुक्त और जीवन विज्ञान में वर्तमान रुझानों पर राष्ट्रीय सम्मेलन के सार और स्मारिका में, 55 (सार आईडी: 6054 एट पीएसआरएम एट 2023–24)।

❖ निकिता राय और ननिता बेरी (2024)। मध्य प्रदेश की मध्य नर्मदा घाटी और बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कृषि वानिकी प्रणाली की विविधता। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की सार पुस्तक में, वानिकी, वन्यजीव और पर्यावरण विज्ञान विभाग (आईसीएफआरई ए प्लस प्लस ग्रेड) गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (एक केंद्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, सी.जी. (भारत), 24 जनवरी, 2024, पेज नं. 30।

❖ निकिता राय और ननिता बेरी (2024)। मध्य प्रदेश के मध्य नर्मदा घाटी के अंतर्गत नर्मदापुरम में वृक्ष आधारित खेती की विविधता। सम्मेलन की कार्यवाही में जलवायु परिवर्तन और कृषि पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन: टिकाऊ खाद्य सुरक्षा और आजीविका सुधार के लिए प्रभाव, शमन और अनुकूलन (आईसीसीए—2024) कृषि वानिकी विभाग, बागवानी और वानिकी महाविद्यालय, आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज द्वारा आयोजित किया गया। , अयोध्या, 1 से 2 मार्च, 2024. पेज नं. 168।

❖ ननिता बेरी (2024)। बांस आधारित उद्यम: आदिवासी महिला समुदाय के लिए आय सुजन का मार्ग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.) में वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। पृष्ठ सं। 95 (एफओआरएबी95)।

❖ शिवानी रोहिल्ला, नीरज प्रजापति, एच. एस. गिनवाल, विकास राणा (2024)। बांस का पुनरुत्थान: आजीविका को सशक्त बनाना और सेलूलोज—आधारित उद्योगों के लिए एक स्थायी भविष्य को आकार देना। वन और नवाचार पर सम्मेलन: एक बेहतर दुनिया के लिए नए समाधान 9 संयुक्त रूप से आयोजित: उत्तराखण्ड जैव विविधता बोर्ड, उत्तराखण्ड सरकार, देहरादून और जैव प्रौद्योगिकी विभाग, ग्राफिक एरा डीम्ड विश्वविद्यालय, देहरादून।

❖ नीरज प्रजापति, हरिओम सकर्सैना, नीलू सिंह (2024)। पारंपरिक उपचार की खोज: छत्तीसगढ़ में पुरानी बीमारियों के लिए एथनोमेडिसिन का एक मात्रात्मक विश्लेषण। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय सेमिनार में मध्य भारत। पृष्ठ सं। 67।

❖ नीलू सिंह, दिविजयसिंह राठौड़, नीरज प्रजापति निकिता राय, शशाक गुप्ता (2024)। मध्य भारत में वन पारिस्थितिकी तंत्र पर लैंटाना कैमारा का प्रभाव। वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 24 जनवरी, 2024। पृष्ठ संख्या। 22।

❖ वर्षा पांडे और हरिओम सकर्सैना (2024)। एब्रिलोन इंडिकम

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संरक्षण—12 एवं 13



लिन के अंकुरण और विकास प्रदर्शन पर विभिन्न बुआई—पूर्व बीज उपचारों का प्रभाव.. आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोग” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन। पृष्ठ सं। 97।

⌘ आकांक्षा जैन और हरिओम सक्सेना (2024)। कर्कुलिगो ॲर्कियोइड्स गार्टन के अंकुरण पर प्रसार सामग्री का प्रभाव। (काली मूसली). आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 95।

⌘ धीर अग्निहोत्री, हरिओम सक्सेना और प्रमोद कुमार (2024)। टेक्टोना ग्रैंडिस आधारित सित्वीमेडिसिनल प्रणाली के तहत स्टीविया रेबाज़डियाना बर्टोनी के विकास और उपज प्रदर्शन पर फसल ज्यामिति और विभिन्न जैविक खादों का प्रभाव। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 79।

⌘ समीक्षा परिहार और हरिओम सक्सेना (2024)। एक मान्य एचपीटीएलसी विधि के माध्यम से कैसिया फिस्टुला एल के विभिन्न पौधों के हिस्सों में बीटा—साइटोस्टेरॉल और ल्यूपॉल का एक साथ अनुमान। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 78।

⌘ समीक्षा परिहार, हरिओम सक्सेना और शिवओम सिंह (2024)। द्राइकोडर्मा एसपीपी की मॉर्फो—आणविक विशेषता, विविधता विश्लेषण और विरोधी गतिविधि। राइजोकटोनिया सोलानी के विरुद्ध मध्य भारत की वन मिट्टी से अलग किया गया। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 76।

⌘ मोहम्मद फारुक और हरिओम सक्सेना (2024)। टर्मिनलिया चेबुला रेट्ज के फलों में गैलिक एसिड सामग्री में भिन्नता। प्रमुख स्थान के लिए मध्य प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों से। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 75।

⌘ समीक्षा परिहार, हरिओम सक्सेना और इरमनाज बी (2024)। मॉर्फो—रासायनिक विविधताएं और स्टीरियोस्पर्मम सुवेओलेस (रॉक्सबी) डीसी का पूर्व—स्थान संरक्षण। — एक आरईटी प्रजाति। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 74।

⌘ गणेश पवार, हरिओम सक्सेना और समीक्षा परिहार (2024)। व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की प्रजाति होलारेना एंटीडिसेंटरिका (एल.) में विभिन्न परिधि वर्गों और कोन्सेसिन सामग्री के बीच सहसंबंध अध्ययन। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 72।

⌘ हरिओम सक्सेना, समीक्षा परिहार, गणेश पवार, संत कुमार और

धीर अग्निहोत्री (2024)। रासायनिक जांच, बेहतर जर्मप्लाजम की पहचान, नर्सरी तकनीक और मध्य भारत की कुछ खतरे वाली औषधीय पौधों की प्रजातियों का पूर्व—स्थान संरक्षण। आईसीएफआरई—आईएफपी, रांची द्वारा “औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और उपयोगिता” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 44।

⌘ वर्षा पांडे और हरिओम सक्सेना (2024)। सिडा कॉर्डिफोलिया (बाला): वन पारिस्थितिकी तंत्र में संरक्षण के लिए एक संभावित औषधीय पौधे की प्रजाति। जीजीयू बिलासपुर द्वारा “वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्र” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, पेपर आईडी: एफओआरएबी31, पृष्ठ संख्या। 33।

⌘ हरिओम सक्सेना, गणेश पवार, संत कुमार, धीर अग्निहोत्री और नीलू सिंह (2024). रासायनिक जांच, बेहतर जर्मप्लाजम की पहचान, नर्सरी तकनीक और एम्बेलियाट्सजेरियम—कोटम (रोएम और शुल्ट) ए डीसी का पूर्व—स्थान संरक्षण। जीजीयू बिलासपुर द्वारा “वन और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान के सीमांत क्षेत्र” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, पेपर आईडी: एफओआरएबी29, पृष्ठ संख्या। 31।

⌘ समीक्षा परिहार, हरिओम सक्सेना, शिवओम सिंह और आशीष कुमार (2024). द्राइकोडर्मा एसपीपी की मॉर्फो—आणविक विशेषता, विविधता विश्लेषण और विरोधी गतिविधि। मैक्रोफोमिनाफैसोलिना के विरुद्ध मध्य भारत की वन मिट्टी से पृथक। आईआईआईएम, जम्मू द्वारा पारंपरिक चिकित्सा और फाइटोफार्मास्यूटिकल्स पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और एथनोफार्माकोलॉजी (आईसीटीएमपी—एसएफईसी 2024) के लिए सोसायटी की 11वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 106।

⌘ हरिओम सक्सेना, समीक्षा परिहार और गणेश पवार (2024). डिलेनिया इंडिका लिन के विभिन्न पौधों के भागों में बीटुलिनिक एसिड, बीटा—सिटोस्टेरॉल और ल्यूपियोल का एक साथ डेस्टोमेट्रिक निर्धारण। एक मान्य एचपीटीएलसी विधि के माध्यम से। आईआईआईएम, जम्मू द्वारा पारंपरिक चिकित्सा और फाइटोफार्मास्यूटिकल्स पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और एथनोफार्माकोलॉजी (आईसीटीएमपी—एसएफईसी 2024) के लिए सोसायटी की 11वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन किया गया। पृष्ठ सं। 67।

⌘ गुप्ता, डी., गुरु, एन., दास, पी. और पाटीदार, एन. (2024). बुन्देलखण्ड के सूखा प्रभावित जिले में फसल संघनता और भूजल स्थिति पर जल संरक्षण उपायों का प्रभाव। तीसरा रूड़की जल सम्मेलन। पेपर आईडी—आरडब्ल्यूसी एट2024एट105। पृष्ठ सं। 116।

⌘ नसीर मोहम्मद, मुथु राजकुमार और योगेश्वर मिश्रा (2024). टेरोकार्पस मासुपियम रॉक्सब का प्राकृतिक पुनर्जनन। मध्य प्रदेश में — उपोष्णकटिबंधीय वन की एक लुप्तप्राय मधुमेहरोधी वानिकी प्रजाति। उत्तरी बंगाल में औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और सतत उपयोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 13—14 मार्च, 2024, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल। पृष्ठ संख्या। 94।

⌘ हर्षिता अग्रहरि, अंकुर दहायत, राज सिंह यादव और नसीर मोहम्मद (2024)। “एगल मार्मलोस (एल.) कोरिया — एक

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13



मूल्यवान औषधीय वृक्ष – की पत्तियों से चार डीएनए निष्कर्षण प्रोटोकॉल का तुलनात्मक मूल्यांकन। वन और वन्यजीव विज्ञान

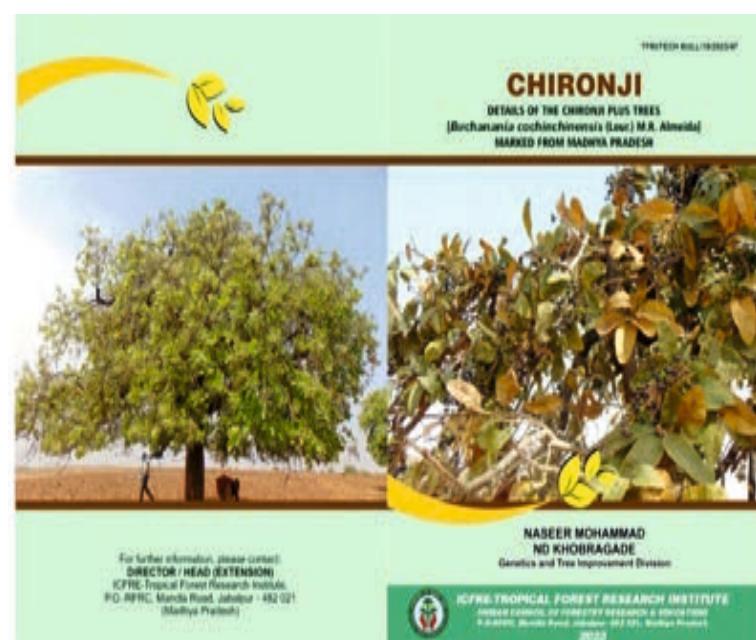
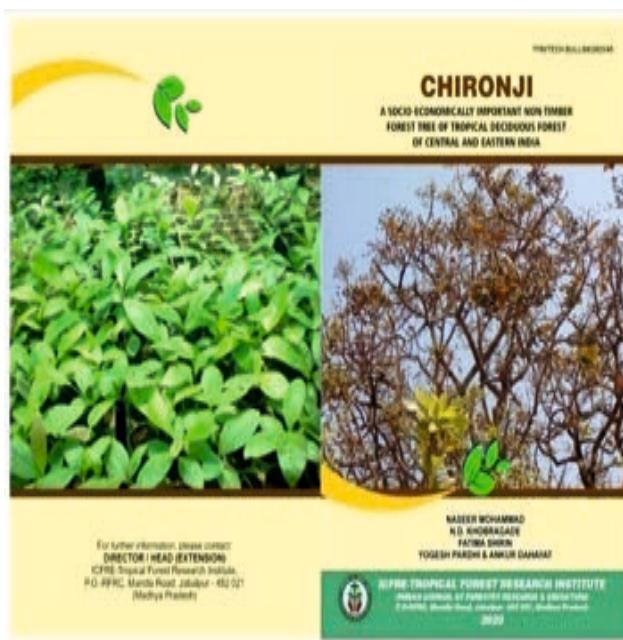
में अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगठनी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (सी.जी.)। पृष्ठ संख्या 82।

तकनीकी पुस्तिका और बुलेटिनः

- ⌘ चिराँजी: मध्य प्रदेश से चिह्नित चिराँजी प्लस पेड़ों का विवरण (बुचानिया कोचीनचिनेसिस (लूर.) एम.आर. अल्मेडा)। नसीर मोहननाद और एनडी खोबरागड़े द्वारा लिखित।
- ⌘ चिराँजी: मध्य भारत के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन का एक सामाजिक-आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण गैर-इमारती वन वृक्ष। नसीर मोहम्मद, एनडी खोबरागड़े और अन्य द्वारा लिखित।
- ⌘ डॉ. ननिता बेरी (2024)। बहुमूल्य वृक्ष प्रजाती के वृक्षरोपण एवं इसका प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण। बिलासपुर और दुर्ग वन वृत्त के वन अधिकारियों के लिए क्रमशः 12/03/24 और 13/03/24 को आयोजित बहुमूल्य वृक्ष प्रजाती के वृक्षरोपण

एवं इसका प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण पर पुस्तिका तैयार की गई। पृष्ठ सं। –1–59।

- ⌘ ननिता बेरी (2023)। खमेर कृषि वानिकी मॉडल के साथ पान। टीएफआरआई/टेक बुल/09/2023/46।
- ⌘ विशाल वर्मा, मनोरंजन विश्वाश, संजय हिंगवे, आशीष तिवारी, कौशल त्रिपाठी (2023)। पोषण संबंधी सीमा: केंद्रीय अनाजों में बायोफेर्टिफिकेशन रणनीतियाँ। एलफिन्स्टन प्रकाशन नई दिल्ली। त क नी की बुले टिन संख्या 1 ईपीडी/2/2023/03/11।



पुरस्कारः

डॉ. मोहन सी वैज्ञानिक—बी को कीट विज्ञान अनुसंधान संस्थान लोयोला कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु में “कृषि, औद्योगिक कीट विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान में हालिया प्रगति और खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा पर उनके प्रभाव” पर आयोजित 5वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर “यंग फॉरेस्ट एंटोमोलॉजिस्ट अवार्ड 2023” से सम्मानित किया गया।

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण–12 एवं 13



भा.वा.अ.शि.प. — उ.व.अ.स., जबलपुर में बुनियादी ढांचा और उपलब्ध सुविधाएँ :

राष्ट्रीय कीट भंडार



- ⌘ कीटों की 750 प्रजातियाँ संरक्षित हैं।
- ⌘ राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) द्वारा राष्ट्रीय कीट भंडार के रूप में मान्यता प्राप्त है।

माइकोलॉजी हर्बेरियम



- ⌘ 4000 कवक नमूनों को व्यवस्थित और प्रलेखित किया गया और कवक की 451 प्रजातियों की पहचान कीगई।
- ⌘ वन कवक पहचान सेवा उपलब्ध है।

हर्बेरियम



- ⌘ हर्बेरियम में 800 पौधों के नमूने संरक्षित हैं।
- ⌘ वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग नमूने प्रस्तुत करने पर पौधों की पहचान की सेवाएँ प्रदान करता है।



गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद (एनटीएफपी) प्रदर्शन केंद्र व्याख्या केंद्र – संग्रहालय

व्याख्या केंद्र – संग्रहालय

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



भा.वा.अ.शि.प. —उ.व.अ.स., जबलपुर में उपलब्ध परीक्षण सुविधाएं

S. No.	प्रतिमान	रुपये में कीमत
1	pH	100/- प्रति सैम्प्ल
2	EC	100/- प्रति सैम्प्ल
3	कार्बनिक कार्बन (OC) ध्कार्बनिक पदार्थ	100/- प्रति सैम्प्ल
4	प्रमुख पोषक तत्व (N,P,K,Ca,Mg,S)	300/- रुपये प्रति पैकेज और 1500/- का पैकेज
5	सूक्ष्म पोषक तत्व (Mg, Ni, Zn, Fe, Co, Cr, Cu, Mn, B)	300/- प्रत्येक पैकेज और 2000/- पैकेज।
6	बनावट विश्लेषण	500/- प्रति सैम्प्ल
7	थोक घनत्व	150 रुपये प्रति सैम्प्ल
8	कुल मृदा विश्लेषण (1 से 7)	4000/- प्रति सैम्प्ल
9	शुष्क पदार्थ / नमी प्रतिशत	100/- प्रति सैम्प्ल
10	पौधे परीक्षण — एन, पी, के, सीए, एमजी, ना	250/- तत्व और 1300/- सभी के लिए
11	पौध पहचान शुल्क	250/- सैम्प्ल
12	बायो-कंट्रोल एजेंट-अंडा परजीवी कार्ड (25000 अंडे & कार्ड)	300/- कार्ड
13	कीट डिफोलिएटर/व्हाइट ग्रब के विरुद्ध कीटनाशक (जैव कीटनाशक/कीटनाशक) का प्रयोगशाला परीक्षण	20,000/- प्रति डिफोलिएटर 40,000/- प्रति सफेद ग्रब
14	दीमक और कीट डिफोलिएटर के खिलाफ कीटनाशकों का क्षेत्र परीक्षण	1,00,000/- सैम्प्ल
15	क्षय कवक / मोल्ड के लिए पहचान सेवाएं।	1000/- प्रजातियां
16	कवक नमूने की पहचान और हर्बेरियम के साथ इसका मिलान	250 रुपये प्रति सैम्प्ल
17	कवक की सूक्ष्म फोटोग्राफी	100/- प्रति सैम्प्ल
18	बीज अंकुरण और व्यवहार्यता परीक्षण	500/- प्रति सैम्प्ल
19	बीज शुद्धता परीक्षण	400/- प्रति सैम्प्ल
20	बीजों की नमी की मात्रा	200/- प्रति सैम्प्ल
21	फिनोल का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
22	टैनिन का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
23	कार्बोहाइड्रेट का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
24	स्टार्च का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
25	क्लोरोजेनिक एसिड का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
26	प्रोटीन का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हैं)	600/- प्रति सैम्प्ल
27	एचपीटीएलसी की मदद से औषधीय पौधों की कीमो प्रोफाइलिंग	पहले नमूने के लिए 2000/- और उसी एसपी के बाद के नमूने के लिए 500/- रुपये।
28	पत्ती क्षेत्र माप	200/- प्रति नमूना
29	पौधे के अर्क में एक एकल मार्कर घटक का अनुमान	शिक्षा के लिए 5500/- प्रति नमूना/अनुसंधान एवं विकास के लिए प्रति नमूना, उद्योग के लिए 10000/- प्रति नमूना
30	राख सामग्री	शिक्षा के लिए 610/- प्रति नमूना, उद्योग के लिए 1100/- प्रति नमूना
31	सूक्ष्म विश्लेषण	500 रुपये प्रति नमूना

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण–12 एवं 13



सामाजिक सहायतार्थ उपलब्ध सेवाएँ



पादप प्रजातियां और वृक्ष आनुवंशिकी और वृक्ष सुधार प्रभाग, उ.व.आ.स. जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध

उन्नत किस्में – प्रति पौधा रु. 100/-

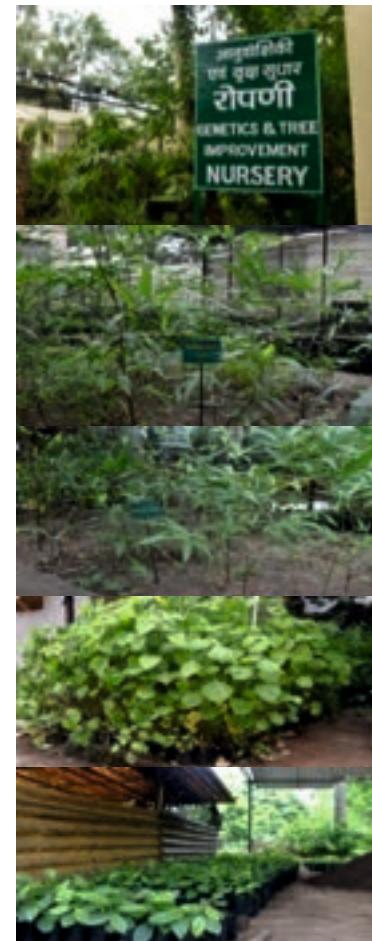
क्रमांक	प्रजातियां	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	राजवोल्फिया सर्पेन्टिना टी.एफ.आर.आई, RS-1 (सर्पगंधा)	200
2.	राजवोल्फिया स्कॉट टी.एफ.आर.आई RS-2 (सर्पगंधा)	150

बांस प्रजाती रु. 25/- प्रति पौधा

क्रमांक	प्रजातियां	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	बंबुसा बंबोस (कटंग प्रतिबंध)	1350
2.	बंबुसा वल्गरिस (वर हरा)	110
3.	बंबुसा नूतन	75
4.	डेंड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस (लाठी बांस)	940
5.	डेंड्रोकैलामस लॉनिस्पैथस	100

वृक्ष प्रजाति और औषधीय पौधे – रु. 25/- पौधा

क्रमांक	प्रजातियां	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	टेक्टोना ग्रैंडिस (सागौन)	200
2.	डेलबर्जिया लैटिफोलिया (काला शीशम, रोजवुड)	200
3.	सेलास्ट्रस पैनिकुलैटस (मालकागिनी, ज्योतिष्मती)	100
4.	प्लम्बैगो जेलोनिका (चित्रक)	100
5.	ओरोजायलम इंडिका (शिवनाग)	50
6.	टैमरिन्डस इंडिका (इमली)	150
7.	अजार्डिक्टा इंडिका (नीम)	50



बिक्री के लिए उपलब्ध बीज और पौधे—

क्रम संख्या	प्रजाति का नाम	दरें		
क्रम संख्या	सामान्य नाम	वैज्ञानिक नाम	बीज(रुपए/किग्रा)	पौधे (रु/पौधा)
1.	सागौन	टेक्टोना ग्रैंडिस	5000/-	30/- (उगाया हुआ बीज)
2.	बीजसाल	टेरोकार्पस मार्सुपियम	5000/-	60/- (ऊतक संवर्धन)
3.	शीशम	डालबर्जिया लैटिफोलिया	7000/-	31/-
4.	सिस्सो	डालबर्जिया सिसू	3000/-	50/-
5.	मैदा छाल	लित्सा ग्लुतिनोसा	10000/-	31/-
6.	चिरोंजी	बुकाननिया लान्जन	8000/-	100/-
7.	कुल्लू	स्टरकुलिया यूरेन्स	----	50/-
8.	महुआ	मधुका लॉगिफोलिया	5000/-	50/-
9.	नीम	आजादिरेक्टा इंडिका	5000/-	50/-
10.	इमली	तमरिन्डस इंडिका	3000/-	50/-
11.	बेल	एगल मार्मेलोस	----	30/-
12.	करंज	पांगामिया पिनाटा	3000/-	30/-
13.	खेमर	गमेलिना आर्बोरिया	1000/-	30/-
14.	हल्दू	हल्दीना कोर्डिफोलिया	----	50/-
15.	बांस	विभिन्न जीव	----	50/-

अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



16.	सर्पगंधा	टीएफआरआई—आरएस— I	----	50/-
17.	कैम / मुंडी	टीएफआरआई—आरएस— II	----	50/-
18.	कुम्भी	मित्रायना पराविलोलिया	3000/-	50/-
19.	जामुन	किरिया आवर्दे	3000/-	50/-
20.	खेत	साईर्जियम क्यूमिनी	3000/-	50/-
21.	बबूल	एकेसिया कत्था	5000/-	50/-
		एकेसिया निलोटिका	3000/-	50/-

वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प. —उ.व.अ.स., जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधे:

क्रम संख्या	प्रजाति	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	टिनोस्पोरा कोर्डिफोलिया (गिलोय)	100
2.	कायम्बोपोगाँन साइट्रस (लेमन ग्रास)	100
3.	आॉरोक्सजायलम इंडिकम इन्दिउम (श्योनाक)	50
4.	मिमुसोप्स एलंगी (मौलश्री)	260
5.	एसपरगस रेसिमोसस (सतावर)	100
6.	अर्तमिसिअ अन्तुअ (डवन)	30
7.	फायलेंथस इम्बिलिका	25
8.	टर्मिनेलिया अर्जुना	30
9.	मोरिंगा ओलेइफेरा एल	1850
10.	बम्बू	600
11.	डेलोनिक्स रेजिया	3000
12.	केशिया फिस्टुला	1000
13.	पोनामिया पिन्नेट	550
14.	टैमेरिडस इंडिका	820
15.	अल्बिजिया लेबेकक	5000
16.	एग्लो मार्मेलोस	540
17.	स्टिजगियम कमझनी	540
18.	टर्मिनालिया बेल्लेरिका	720
19.	अन्य प्रजाति	उपलब्धता के अनुसार



औषधीय/वृक्ष प्रजातियाँ
प्रति पौधे— रु. 30/-

कीमतें और संख्या उपलब्धता और
मौसम के अनुसार भिन्न हो सकती हैं।

- ⌘ भा.वा.अ.शि.प.—उ.व.अ.स. ट्राईको—कार्ड:
- ⌘ उ.व.अ.स. ट्राईको—कार्ड को पर्सिटॉइड, ट्राइकोग्रामा राओई का उपयोग करके विकसित किया गया है।
- ⌘ यह टीक डेफोलिएटर और स्केलटोनाइजर के प्रबंधन के लिए एक पर्यावरण अनुकूलन जैव-नियंत्रण विधि है।
- ⌘ एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 4 कार्ड की आवश्यकता होती है जो कि 500 रुपये प्रति कार्ड की दर से उपलब्ध है।



अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13



विश्राम गृह सुविधाएं और शुल्क:

क्रमांक	व्यक्ति की श्रेणी	सरकारी ड्यूटी पर प्रति दिन किराया (रुपये)		सरकारी ड्यूटी पर नहीं रहते हुए प्रति दिन किराया (रुपये)		
		कमरा 20 no.	कमरा 04 no.	कमरा	सूट	
1.	भा.वा.अ.शि.प. और संस्थानों के अधिकारी भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों और एफआरआई स्वीकृत विश्वविद्यालयों के सलाहकार और रिसर्च फेलो एमओआईएफ एंड सी.सी., न्यू दिल्ली के अधिकारी और विशेषज्ञ वन्यजीव विभागों के अधिकारी भा.वा.अ.शि.प. के पूर्व कर्मचारी और अधिकारी वर्तमान/पूर्व कर्मचारियों के परिवार के सदस्य	150	200	200	300	
2.	भा.वा.अ.शि.प. कर्मचारी भा.वा.अ.शि.प. अधिकारी एफआरआई डीम्ड विश्वविद्यालय के तहत स्वायत्त निकायों, विश्वविद्यालयों के अधिकारी			200	300	
3.	एसएफडी के अलावा केंद्र/राज्य सरकार के अधिकारी	200	300	400	500	
4.	अन्य (गैर-सरकारी)			600	750	
5.	स्थायी मंच के साथ सामुदायिक उद्यान/हॉल (चैंजिंग रूम/सिटिंग रूम की सुविधाएं)	50,000/per day				

उपरोक्त किराए के अलावा रखरखाव शुल्क निम्नानुसार लागू होगा

आवास का प्रकार	एसी सहित रखरखाव शुल्क, हीटर शुल्क
कमरा	200
सूट	250



अक्टूबर 2023—मार्च 2024 | संस्करण—12 एवं 13



संरक्षक

डॉ. एच. एस. गिनवाल

निदेशक

भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर

मुख्य संपादक

श्रीमती नीलू सिंह

वैज्ञानिक— जी, समूह समन्वयक (अनुसंधान)

भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर

संपादक

डॉ जंगम दीपिका

वैज्ञानिक—सी, पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर
डॉ कौशल त्रिपाठी

वैज्ञानिक—सी, अनुवांशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर
श्री नीरज प्रजापति

वैज्ञानिक—सी, वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर
डॉ. दर्शन के.

वैज्ञानिक—सी, वन सुरक्षा प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर
श्री अजित कुमार मौर्या

वैज्ञानिक—सी, वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर

तकनीकी कार्य

श्री एच. एल. असाटी

सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी,
भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर

श्रीमती निकिता राय

वरिष्ठ तकनीशियन,

भा.वा.अ.शि.प.— उ.व.अ.स., जबलपुर

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

समूह समन्वयक अनुसंधान

भा.वा.अ.शि.प.— उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

पी.ओ.: आर.एफ.आर.सी., मंडला रोड, जबलपुर— 482021, मध्यप्रदेश
फोन नंबर: +91—761—2840010(ओ) फैक्स: +91—761—2840484

समूह समन्वयक (अनुसंधान) फोन: 0761—2840003

वेबसाइट: <http://tfri.icfre.gov.in>

ईमेल: dir_tfri@icfre.org, groupco_tfri@icfre.org

अक्टूबर 2023 – मार्च 2024 | संस्करण-12 एवं 13



संस्थान के बारे में

भा.वा.अ.शि.प—उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (मध्यप्रदेश) मध्य भारत में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों में वन और वानिकी क्षेत्रों के सतत विकास के लिए मजबूत अनुसंधान सहायता प्रदान करने के लिए अप्रैल 1988 में अस्तित्व में आया।



यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (उत्तराखण्ड) के तहत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।



भा.वा.अ.शि.प – कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा, 30 मार्च 1995 को अस्तित्व में आया। इसे 3 जनवरी 1996 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का एक उपग्रह केंद्र घोषित किया गया।



मुख्य अनुसंधान क्षेत्र

- ✓ विंध्य, सतपुड़ा और मैकल पहाड़ियों और पश्चिमी घाटों की पर्यावरण— पुनर्स्थापना, खनन क्षेत्रों का पुनर्वास।
- ✓ कृषि वानिकी मॉडल का विकास और प्रदर्शन
- ✓ वन संरक्षण
- ✓ जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक
- ✓ गैर-लकड़ी वन उत्पाद
- ✓ जैव विविधता मूल्यांकन, संरक्षण और विकास
- ✓ सतत वन प्रबंधन
- ✓ रोपण स्टॉक में सुधार
- ✓ जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण सुधार
- ✓ वन उत्पाद विकास

